

श्रीगणेशायनमः ॥ (ओ नमो देव जगन्मोहन) ॥ मोहनि माह ना आय कारण ॥ कार्यकारणातिवचि ॥
ध्वन ॥ जयजनार्दनसहस्र ॥ जगत्सीपुडे माया मोहन ॥ ते तू निर्दिकसीक्षानघन ॥ जगीजगदुपज नार्दन ॥ कृपाकुपू
र्णरिनाचा ॥ २ ॥ दिनासीदेवमायास्विरूपे ॥ भूळविहावभावस्वरादोपे ॥ तेस्त्रीमोहादिमोहकरूपे ॥ जनार्दनकृपेनि
र्दिकीति ॥ ३ ॥ तेथवैराग्यराठेसंपूर्ण ॥ तेथजनार्दनाचिकृपापूर्ण ॥ वैराग्यतेथब्रह्मज्ञान ॥ सहजेजाणवसावे ॥ ४ ॥ जी
वसहजेब्रह्मचिआहे ॥ तोमायागुणेजीवत्वआहे ॥ जविभेदेनिजेतीनिराये ॥ तोस्वयंचिळाहरकव ॥ ५ ॥ त्यासीराज
पर्यावशो जाण ॥ सेवककरितिस्थापण ॥ जेविवैराग्यगीळीत्रिगुण ॥ जीवाब्रह्मपणस्वयंभचि ॥ ६ ॥ ऐसेस्वयंभजोउ
त्थाब्रह्मपूर्ण ॥ तेहास्त्रीपुरुषहमिथ्याज्ञान ॥ मृषादृश्याचेदराभान ॥ भोग्यभोगतेपणअसेना ॥ ७ ॥ एवंसाधकासीदेवमा
यम ॥ स्त्रीपुरुषेयथेभुलवावया ॥ तेथस्मरताभावेगुरुराया ॥ जायविलयास्त्रीबाधु ॥ ८ ॥ सद्गुरुचेनामएक ॥ निवारिबा
धासाहाशेख ॥ वैराग्यउपजविअलोलीक ॥ तेणहोयनिजस्वसाधका ॥ ९ ॥ निविबाधनिजदाता ॥ आह्लासद्गुरुचितव
तो ॥ याचेचरणीडेवितामाथा ॥ कृखसपन्नतासाधका ॥ १० ॥ संतसाधकाचिनिजमाउली ॥ शोतिनिजस्वसाधिसाउली ॥
जनार्दनकृपेच्यापाउली ॥ कथाचाळीलीयथार्थ ॥ ११ ॥ हाताआलीयानिजनिर्गुण ॥ साधकहोतिस्वसपन्न ॥ तद
र्थकरावेसासेभजन ॥ देवोलीलाश्रीकृष्णप्रचविसावा ॥ १२ ॥ गोवेकरिताभगद्भवजनाएवदाराकृपेकरितिविद्या ॥ तेनिर्दिकवमा
जाण ॥ माझेनामस्मरणकरावे ॥ १३ ॥ अच्युतहेस्मरतानाम ॥ अतापनिर्दिकीकर्मिकर्म ॥ सकळपातकेकरिभस्मा ॥ वाहुगे
नामहरियो ॥ १४ ॥ नामेहोईजेविरक्त ॥ नामेनिर्मळहोयचिन्त ॥ नामेसाधेगुणातिता ॥ नामेनिर्मुक्ताभवपाशा ॥ १५ ॥ दु
ष्टसंगेविषयासक्त ॥ ऊरिशाळाकोलिंगत ॥ अनुतापउपजलीयातेथ ॥ होयविरक्तक्षणार्थ ॥ १६ ॥ महाहोपासी
प्रायश्चीत ॥ केवळअनुतापनिश्चीत ॥ अनुतापदिणप्रायश्चीत ॥ तोजाणयथविटव ॥ १७ ॥ अनुतापायवडा
सरवा ॥ जगीउगाणिकनाहीलोका ॥ धडाडीलयाअनुतापदेखा ॥ सकळपातका निर्दिकी ॥ १८ ॥ अनुतापचळतीया

क्षणार्थवारिकीरत्ना ॥ यची अर्थी ऐतृगीता ॥ हरिसंगत उद्वा ॥ २० ॥ सचीसा व्या उग ध्यायी यथ ॥ विषयासक्त्याचें दि
त्त ॥ सासीकावयाविरक्त ॥ ऐतृगीत प्रस्तावो ॥ २१ ॥ ॥ श्रीक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ प्रहृ क्षणमिमं कार्यं लब्ध्वा मधर्म
आस्थितः ॥ अनेदं परमात्मानमात्मस्थं समुपैति मात्र ॥ २२ ॥ ॥ टीका ॥ करितानो ब्रह्मलक्ष्मीजे परिपूर्ण ॥ हचिकाये
चे मुख्यतक्षण ॥ ते ह मानविदारिर जाण ॥ परमपावनतिनी लोकी ॥ २३ ॥ मनुषदे ही अधर्म ॥ करिताना तुडे परब्रह्म ॥ तेथक
रावे भगदुर्म ॥ जेका परमपावन ॥ २४ ॥ ॥ गगवतधर्म करिता भक्ती ॥ निर्मळ होयचित्तृनि ॥ जीवतोचि ब्रह्मनिश्चीति ॥ ऐसी
शुद्धस्फुटितसावे ॥ २५ ॥ ॥ टसावल्या ब्रह्मस्फुटि ॥ होय स्वानदाचि आवासी ॥ तेणे परमानंदिनीन होति ॥ हे शुद्ध प्राप्तीपे माही ॥ २६ ॥
माहीये प्राप्तीचे तक्षण दे ही असतावतं मान सर्वथाना ही विषयस्फुरण तेचि निरूपण हरिसंगे ॥ २७ ॥ ॥ श्रीक ॥
गुणप्रथा जीवयो न्या विमुक्तो ज्ञाननिदया ॥ गुणेषु माया मात्रेषु दृश्य माने च वरक्ततः ॥ वर्तमानोऽपि न पुमानप्युज्यते
वस्तुभिर्गुणैः ॥ २८ ॥ ॥ टीका ॥ जे मूळ अज्ञानाचि खाणि ॥ जे संसार प्रवाहाचि श्रणी ॥ जे ति ही गुणाचि जननी ॥ माया
रादिअनादि २० माया गुणयोगे पाहा हो सोळाकळाचा संभावो जे वासनात्मक लीगदे हो जीवासी पाहा हो २७ साळा २८
ज्यांती गदे हाचि य प्राप्ति ॥ भोगी नाना सुखदुःखसपति ॥ पडे स्वर्गनिक अवति ॥ मीथ्या मरण सुंक्ति स्वयंशोसी ॥ २९ ॥ व
ध्यापुत्राचा घराचार ॥ ते सा जीवासी संसार ॥ देहाभीमाने कला थोर ॥ अपरां पर अनिवाय ॥ ३० ॥ तेथ गुरुवाक्ये ज्ञानानु
भवा ॥ पाहाता मायचा स्वभाव ॥ ति गदे ह साळा वाको ॥ जीवा जीव भावतो मिथ्या ॥ ३१ ॥ जे विउगवलीयाग भवति ॥ अधारे सी
हारपेराति ॥ ते वि गुरुवाक्ये ज्ञान प्राप्ती ॥ प्रायेचि स्थिति मावळे ॥ ३२ ॥ एवे नारसत्या गुणविकार ॥ जीवन मुक्त होति नरा ॥ जे
विकाकुलात्तचक्र ॥ भवे साचार पूर्व भ्रमणे ॥ ३३ ॥ ते वि प्रारब्धराषेति ॥ ज्ञानेनि जे दे ही वर्तती ॥ वर्तता ही दे ह स्थिति ॥ ३४ ॥
हे कृतिअसे ना ॥ ३५ ॥ जे वि का छाया आपुत्ती ॥ कोणी गां जीनापु जीती ॥ परिकळ वळ्याचि नय भूती ॥ ते वि दे ही चीवाली सज्ञा
ना ॥ ३६ ॥ ॥ तो देहाचे निदेव मेळ ॥ जरि विषया मा जी लोळे ॥ परि विकाराचे नि वि लोळे ॥ एति न मेळ उंनु मात्र ॥ ३७ ॥ सासी वि
षयाचे दर्शन ॥ समूळत्व मिथ्या जाण ॥ करिता मृग जळाचे पाण ॥ करावो लेपण बाधीना ॥ ३८ ॥ गगन कमळाचा उग मोद

नेत्रप्रभवमहायोग्यः । उचितदानगोभीर्षी । महिमा महतिर्विष्य । धर्मधर्मपुरतः । १५०

जैभ्रमरसेविक्रमं ॥ ते सक्षानाविषयसंबध ॥ निजां गी वाधत्वागता ॥ ३८ ॥ असोअत क्यमुकाचि गर्ति ॥ नियमाचि यथा
निगुति ॥ निजात्म प्राप्ती लग्नीसांगे ॥ ३९ ॥ ॥ श्लोकः ॥ संगनकुर्यात्सतां त्रिश्रोदस्तुपां क्वचित् ॥ तस्यानुगतप्रस्यं धे
पसंधानुगोधवत् ॥ ४० ॥ ॥ टीका ॥ त्रिश्रोदसार्थ असत् ॥ स्वधर्मत्यागे अधर्मरत ॥ ऐसेजेविषयासत् ॥ तेजाणनि
श्रीतअसाधु ॥ ४० ॥ ऐसेजे असाधु जन ॥ त्याची सर्वथा आपण ॥ सगतिनकराविजाण ॥ कायावाचामनपूर्वक ॥ ४१ ॥
बोढाकाचिसंगतिपाहे ॥ क्षणभरि गेलीयाधर्मगाय ॥ साक्षणासाठिपाहे ॥ लोढणेगोहे निरंतरा ॥ ४२ ॥ यात्यागीदुर्जना
चिसंगति ॥ क्षणार्धीपाडीअनार्थी ॥ मुमुक्षी ऐश्रियाप्रती ॥ अपुमात्रवस्तिनवचावे ॥ ४३ ॥ लोहाराचिअगीहीजेसी ॥
सहजेपोळीभलयासी ॥ दुर्जनाचिसंगतितेसी ॥ पाडीअपभ्रंशीभाविका ॥ ४४ ॥ अवचेठअसाधुसंगति ॥ जोडलावाठ
वीषयराति ॥ तेणेउठेअधर्मरिति ॥ विवेकस्फुर्तीघातक ॥ ४५ ॥ वाडलाविषयाशकी ॥ अंधहोयज्ञानस्फुर्ती ॥ आपलीआ
पणनदेखेगति ॥ जेविआंधकीरातिअवसेची ॥ ४६ ॥ जेविअंधेअंधधरिआहाति ॥ दोघापतनमहागति ॥ तेविअविवेकाचि
यास्थीति ॥ अथतमाजीतीविषयांध ॥ ४७ ॥ कुसंगाचाजोसांगात ॥ तेणेबोढवेनरकपात ॥ अनुतापसोडवितानेथ ॥ तेएतगी
तहरिसांगे ॥ ४८ ॥ ॥ श्लोकः ॥ एतःसंघाडिमोगाथा मगायतदृहच्छुवाः ॥ उर्वशीविरहान्मुसुनिर्विणः शोकसंय
मे ॥ ४९ ॥ ॥ टीका ॥ समुद्रवलयकीतक्षिति ॥ सकळरायाचाराजपति ॥ पूरुवाचकवति ॥ ज्याचिख्यातिपुराणि ॥ ४९ ॥
राजधर्माचियनिति ॥ स्वधर्मप्रतिपाळीक्षीति ॥ ब्राह्मणतितकाब्रह्ममूर्ति ॥ हाभावनिश्चीतिरायाचा ॥ ५० ॥ प्राणातेहीआपण
नकरिब्राह्मणाहेळण ॥ गाईलागीवेचिप्राण ॥ करिसरक्षणदिनाचे ॥ ५१ ॥ एसाधामीकिल्लचक्रवती ॥ जोउर्वशीचेअसक्ति
भूलेनिठेलाभपति ॥ निजात्मगतिसरत्का ॥ ५२ ॥ तेणेअनुतापेगाईलीगाथा ॥ तेतुजमीसांगनभाता ॥ परिसमाचीपू
र्वकथा ॥ कामासक्ततातेके ॥ ५३ ॥ विसरोनिनिजमहात्मी ॥ अतिदिनजातोवैश्यसी ॥ कामपिसलाविमनुष्यासी ॥ तेए
लहतिहासीहरिसांगे ॥ ५४ ॥ एतउर्वशीकामासकी ॥ सवेचिअनुतापविरती ॥ हकथाबोळीलीवेदाति ॥ तेचियदुपतिस्य
यसांगे ॥ ५५ ॥ उर्वशीपुरुवर्याचासबधु ॥ नवमस्कंदिअसेविनादु ॥ तेणेजाणोनियागांविदु ॥ एथकथाअनुमादुनकरिच ॥ ५६ ॥

परिमुमुक्षालागी श्रीपति ।

उर्वशीपुरर व्याच संवधु ॥ न व मरुधी असे विषदु ॥ तेणे जाणेनि यागोविशु ॥ यथ कथा अनुवा दुनक दिच ॥ ५५ ॥
 ५६ ॥ पूर्वकथासवध ॥ उर्वशी स्वर्गाभूषण ॥ नारायणे धाडी ली आपण ॥ ते उर्वशीसी शर्व पूर्ण ॥ सुष्टुपण मानु नि ६॥
 त यागवीचिये रशी ति ॥ तालचुकवि नृत्य गति ॥ तेणे ब्रह्मशापाचि प्राप्ती ॥ अनुजमानविभोगविति भूतकी ॥ ५७ ॥ उ पशापमा
 गा ॥ ता तिसी ॥ ब्रह्मासोगे तिर्ये प्रप्ति ॥ न मदेखी त्नापु रुर व्यासी ॥ स्वर्गाये सी निमि अमोत्र ॥ ६० ॥ ऐसा ता हो नि शापा सी ॥ ५८ ॥
 आली उर्वशी ॥ ऐसा निया ति चिया स्वरूपा सी ॥ पूरु र ना ति सी भू ल त्ना ॥ ६१ ॥ विसरोनि उा पु ली मं ह ति ॥ वश्य शा ता वे स्ये प्र ति ॥ न
 पा भू ल त्ना भू प ति ॥ वि चार स्फु ति वि सर त्ना ॥ ६२ ॥ न म देखी ली या रा या सी ॥ सां डु नि जा वे उ र्व शी ॥ ऐ री भा क दे उ नि ति सी ॥ नि
 ज भो गा सी आ गि ली ॥ ६३ ॥ ति णे आ पु ली ये श पा सी ॥ आ गि रो घा ट के डु क्वा सी ॥ पु त्र के ह पा का वे ल्या सी ॥ ते वि री भा क सी दि
 ध ले रा य ॥ ६४ ॥ ते उ र्व शी चे काम प्रा सी ॥ आ ति शय वा ढी ली का मा स की ॥ ने णे उ द या र त दि व स रा ति ॥ ऐ शा अ मि त ति धी ले
 ट ल्मा ॥ ६५ ॥ ऐ सा उ र्व शी स र काम ॥ वि स ल्ना स्व ध र्म का र्म ॥ वि सर त्ना नि ल्ये न म ॥ का म स भ्र म वा ठ ल्मा ॥ ६६ ॥ ते थ मे प रू पे रा घे
 ज ण ॥ सा ले उा म्नी नो क मार आ प ण ॥ उ र्व शी भो श का र ण ॥ पा हा व या जा ण ई ड्रे टे वि ले ॥ ६७ ॥ पु र र वा च्या भो ग प्रा सी ॥ उ र्व
 शी न्या व या स्य र्मा प्र ति ॥ हो निया उ के चो र ने ति ॥ म ध्या न रा ति मे मा त ॥ ६८ ॥ ऐ को नि म णा च्या शो द्हा सी ॥ दुः ख हा उ व डु ली उ र्व
 का ले ॥ अ णो नि क पा ड ते पी रि ॥ ७० ॥ ऐ को नि स्त्री ये चा शो क थो र ॥ रा खे घे उ नि स ल र ॥ धा व ता फी ट ल्मा पि ती व र ॥ ते नृ प
 व र स म जे ना ॥ ७१ ॥ प रा भ उ नि त चा र ॥ मे ष आ गि ता स ल र ॥ वि धु ल ता स क क ली थो र ॥ त व न ग न रा रि र मा या चे ॥ ७२ ॥ न म
 क र नि रा या सी ॥ सां डु नि नी धा ली उ र्व शी ॥ ति चे नि वि यो गे मा न सो ॥ अ ति शो का र्मी पा व ल्मा ॥ ७३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ल्य क्ता मा
 ने व्र ज ती तां न म्ना उ न्म त व न्द्र पः ॥ विल प न्म व्व गी ज्ञा षे धा र ति षु ति क्क वः ॥ ५१ ॥ ॥ टी का ॥ पृ थ्वी परि पा ल्ना नि व
 रि षु ॥ स्व ध र्मा ध र्मी के अ र ॥ रा खे र म नि अ ति रू भ र ॥ उ ता प उ ड्रे ट म हा वि र ॥ ७४ ॥ जो ण व र रा स व वि वे क ॥ या सी व रि मि
 स क ड ल्मा के ॥ तो हो वे श्य चा अ ति रू क ॥ सा लो र त्व नि जा ग ॥ ७५ ॥ क रा अ र क र न र वा ल वि मा म ॥ जो अ त्म ही न स्या दे उा
 प मा न ॥ तो वै श्य त्मा गी शा ता रि न ॥ नि ज स न्ना न वि स रो नि ॥ ७६ ॥ उ र्व शी जा तो र खो नि दि शि ॥ उ त्त प उ त ल गे पा रि ॥ स्फु

पा

दत्तापोठी स्वासनरिगे ॥७७॥ दोळभरि पाहुदरिही ॥ सागेन जीवि-आगुह्य गोही ॥ प्राणरिगो पोहु उराउरि ॥ ७७७॥
७७७॥ अपुला पूर्वजाचे आण ॥ कदानुत घीतुसेवचन ॥ सत्यप्रानिह प्रमाण ॥ तुज कायकारणर सावया ॥
तुज चालताळवटाही ॥ सेणखेडरुत तीळ पाई ॥ तुज जाणकोणरायी ॥ तरिसनेमीहि वईन ॥ ७७८॥ जाउनकोउभा राहा ॥ पवने
ने मजकेडेपोहे ॥ प्रणेनि धरधावे पायो ॥ तवते जायउपेक्षणी ॥ ७७९॥ जासीसजेमुगुहमनि ॥ सदायेतिलोठागणि ॥ तोलगेवे
नेचेचरणि ॥ वापकरणीकामाची ॥ ७८०॥ तुसीमजअतिकळवळी ॥ तुज लागीचिनमासेकोमळ ॥ तुकरिणसाळीसेकवळको
पधळकोधरिळा ॥ ७८१॥ यापरिसयाचेचिन ॥ विहोरैनेरागोककुलीत ॥ अतिशयग्लानियुक्त ॥ नेग्लानिसागत श्रीहृळा ॥ ७८२॥

॥ श्लोक ॥ कामानतुसोः नु जुषनक्षल्लकान्वर्षयामिनीः ॥ नवदयति नोयती र्वव्याहृष्टचवनः ॥ ६० ॥
पुर्वशीकामीकामासक्त ॥ एकामसाले रायाचेचिन ॥ नेणेसूर्यो गतागत ॥ केल्याभातकेदपी ॥ ७८३॥ भोगीतीचिकामिनि ॥ भो
गीताहीअनुदिनि ॥ अधिकप्रमवाढलेमनि ॥ एसातिजलागुनीअसक्त ॥ ७८४॥ भोगीताउर्वशीकामासी ॥ नेणेरिवसमासव
षीसी ॥ व्योभालाआयुपासी ॥ ह्रीत्यासीस्मरणा ॥ ७८५॥ जेविअग्नीमाजीएनेपडे ॥ तवतवजाळअधीकरोठ ॥ तेविकोता
भोगीताशेडकोडे ॥ कामपुटेपोरावे ॥ ७८६॥ विच्यारिताक्यीकामासी ॥ अतितुळत्वदिसयासी ॥ तोहीभोगीताअहीविशी ॥
विरकीरायाशुनुपजेचि ॥ ७८७॥ जीतिगुंतलीउर्वशीसी ॥ अतिग्लानिकरितानिसी ॥ परतोनिनयचिरायापासी ॥ निघेवेगसी
साडेनि ॥ ७८८॥ उर्वशीनेदखूनिपुटे ॥ राजाविरहेमूखीतपडे ॥ पाहोधावेईकडेतिकडे ॥ अक्रोशरडेअतिदुःखी ॥ ७८९॥ अट
णेफिरतादाहीदिशी ॥ उभावचेरआलाकरुक्षत्रासी ॥ तवअंतरिक्षपुर्वशी ॥ देखेदळीसीनृपनाथ ॥ ७९०॥ देखोनिहृण
धावपाव ॥ मजलागीदेकावेगीखेव ॥ येरिखणेमूठभाव ॥ सोडीसर्वविषयांधा ॥ ७९१॥ आहीस्यीयांचीअसक्ति ॥ कशाध
उनदुगाभुपति ॥ सदाक्यीयाचिरुळजाति ॥ जाणनिश्रीतिमाहाराजा ॥ ७९२॥ विशेषआहीस्येरिणि ॥ सेढायुरुषगाति
नि ॥ अमुचावरेवासमनी ॥ सनिनमानिनृपनाथा ॥ ७९३॥ आह्याप्रमादाचेसंगति ॥ सायाटकलेनेणोकीति

आतासाड निआमचि असकि ॥ हाइ परमार्था असक ॥ १६ ॥ बहुकाळ भोगीता माझा भोग ॥ अयापि तु
 पजेतुज विराग ॥ कामासकी साडु निराग ॥ साधीचांग निजराचि ॥ १७ ॥ राजात्मनि करि आश्रये ॥ एकवे
 कातिजांग अंग ॥ मजदेर उगागसंग ॥ करवसं भोगकामीनि ॥ १८ ॥ निरगरे सोनि ग्हा णिसी ॥ कपेणद्रवली उर्व
 सी ॥ मगते आपुत्मा पुर्वरतातासी ॥ रायापारसी निवेदि ॥ १९ ॥ मीखगीगना अतिखरूप ॥ मजघडला ब्रह्मशाप
 तु महाराज पुण्यपुरुष ॥ संगेनीः पापमीशात्म ॥ २० ॥ तुसे निसेगेमी धीत ॥ कापविस्तरले समस्त ॥ मजतुज
 मगनघडेयेथा ॥ मिअसे जातस्वर्गासी ॥ २१ ॥ एकोनि उर्वत्रीचिवचन ॥ राजाविरले करिरदन ॥ लौच तेकाकळवळ
 लतिचेमन ॥ साउपाय पूर्णदाविला ॥ २२ ॥ प्रार्थुनियांग धवसी ॥ आग्नीथाती दिधली रायासी ॥ यावरिकक नियाया
 गासी ॥ मजपावसी महाराजा ॥ २३ ॥ उर्वत्रीवियोगेव्यथा भूत ॥ आग्नीस्थाली उपेक्षितेथ ॥ रावनिजमदिरायेत
 दोकाकलीत अतिदुःखी ॥ २४ ॥ उर्वत्रीचिव्यथारायासी ॥ रचन्मीदखिलेतियेसी ॥ वरणेपाहू आलाथातीसी ॥ तवदेखे
 अइवथासी शमीगर्भ ॥ २५ ॥ याच्या अरणि करणीदेख ॥ यज्ञाग्नीपाडी लाचेख ॥ यजुनिपावला उर्वत्रीलो कर काम सु
 ख भोगेच्छा ॥ २६ ॥ भोग भोगीतिता उर्वत्रीसी ॥ विरकी उपजलीरायासी ॥ तोजेचोलीला अनुतापेसी ॥ ते एकतुजसी सं
 गेन ॥ २७ ॥ अठराश्लोकाचे निरूपण ॥ राजाबोलीला आपण ॥ आठश्लोकी अनुताप पूर्ण ॥ तेचि श्रीकृष्णस्य संगे ॥ २८ ॥
 ॥ श्लोक ॥ एतुवाच ॥ अहोमे महाविस्तारः कामकर्मलचेतसः ॥ मूर्षितिवर्ष पूगानां वनहानिगतान्यु
 त ॥ ७ ॥ ॥ वीका ॥ ऐलागितेचा अनुताप ॥ नात्री अगम्या गमनपाप ॥ करिओयासीनीत्याप ॥ साधकाकद
 र्पबाधीना ॥ २९ ॥ जेविमदगजगजीसंगी ॥ नानाअपतिस्त्रयभोगी ॥ तेविउर्वत्रीच्यासभोगी ॥ शाळाविरागी पुरुरका
 ॥ ३० ॥ जेउर्वत्रीलागी अनुरक्त ॥ तोचितिसी शाळाविरक्त ॥ तेणैवैराग्ये अनुतापयुक्त ॥ स्वयबोळत एतकशब्दो ॥ ३१ ॥ मास्य
 मोहाचा विषयविस्तार ॥ कामासक कामातुर ॥ कश्चीदकंदर्पाचे घर ॥ म्याचिमाचारसेविले ॥ ३२ ॥ उर्वत्रीकाम अ

ति अस्मत् ॥ कामानुरसात्वे चित् ॥ तेण म्या जोडीत्ता अनर्थ ॥ तीथे के ले अर्थ आयुष ॥ १३ ॥ उर्वशी कंठ सहस्र मन छे
त्र ॥ अयुष छंदनि सतेज धार ॥ छे दिले आयुष्य आपार ॥ ते मी पामर स्मरेण ॥ १४ ॥ कांता अती गण विषवत्नी ॥ म्यां कं
टी घातकी सकाम भुक्ती ॥ तेण आयुष्या चिहाळी के ली ॥ विवेक समुक्ती गीळीत्ता १५ ॥ कामिनिकाम अती गंढी कंठी
पेट विळादा वाग्नी ॥ तो धडाडीत्ता आयुष्य रति ॥ विवेक आवनि जाकीत ॥ १६ ॥ नरदेही उत्तमोत्तम ॥ अमोत्तम आयुष्य
के ले भस्म ॥ जळो जळो मासे कर्म ॥ निय अर्ध म तो एक ॥ १७ ॥ नरदेही चा उरुयुष्य पुढी ॥ साधक निगा ले वैकुंठी ॥
हाते व्रत्र सात्वे उदा उदि ॥ ते म्या कामा सादि ना दिले ॥ १८ ॥ ॥ श्लोक ॥ नाहं वेद भि निर्मुक्तः सूर्या वाऽप्युदिते
भुया ॥ मुषितो वर्ष पू गानं बतहानि गतान्युत ॥ १९ ॥ ॥ टीका ॥ नरदेहाचे आयुष्य क्षण ॥ नमीळेर ता
कोटि सवर्ण ॥ ते म्या ना सीले संपूर्ण ॥ उगपण्या आपण ना डीले ॥ १९ ॥ साधू चियानि जस्यार्थ ॥ साधू निधाव यो उग
वेसविता ॥ निमिषो नमो षे परमार्था ॥ साधक तत्व ता साधीति ॥ २० ॥ तो चिसविता सकामासी ॥ आयुष्य उग्र हिनि
शी ॥ हे नकेळे ज्याचे यासी ॥ नरक पातासी निजमूळ ॥ २१ ॥ पुढीत्ता विगोटी ते कायसी ॥ मीचि ना डले उर्वशीसी ॥ ह
राससात्ता आयुष्यासी ॥ हा हाणिकोणासी सो गावि ॥ २२ ॥ जनासी याही तासी वहीत्ता ॥ सूर्या अनुरिनि उगवत्ता ॥ ते मि
ने णि च दादुत्ता ॥ उर्वशी काम भुलता उन्मत ॥ २३ ॥ सूर्याचा उरयो अस्तमान ॥ वर्ष ही लोटे ल्या ना ही ज्ञान ॥ करिता
उर्वशीचे उगधर पान ॥ तेण मर संपूर्ण मातलो ॥ २४ ॥ मद्यमदु उतेर दिनाति ॥ धनमदु जायनि धन स्थीति ॥ तारुण
मद जाय क्षीण शक्ति ॥ त्वीमद प्राप्ती कदानुतर ॥ २५ ॥ नरदेहाचे अयुष्य कथा ॥ पुढे ति दुर्लभ नलगे हाता ॥ जको हे
उर्वशी देव कांता ॥ दिणे चित त्वता नागविले ॥ २६ ॥ मी निर्भय रक्षिता सवीसी ॥ यामज नागविले उर्वशी ॥ हे लाज संगोको
णा पावगी ॥ उकसा बुकसी स्फुरत ॥ २७ ॥ माझ्यानि जही ताचार ॥ हे उर्वशी जीव मारू ॥ सवेचि उपज लावि चार ॥ तेथ
मीचि पामर अविवेकी ॥ २८ ॥ मग अं कडे अति गजो नि ॥ कामे नागविले आयुष्य हारोनि ॥ याही हुनि अधिक हानि

पाहाताये जनिअसेना ॥२०॥ ॥ श्लोक ॥ अहमेअमसमो हे येनात्मायोषीतां कृतः ॥ श्री ठामृगश्वर
 वतीनरदेव विरवामणिः ॥२१॥ ॥ टीका ॥ राजमुकटाचे घृतापि पूर्ण ॥ मास्याचरणायेति शरण ॥ लोमी वैश्यचे धरि
 चरण हे निर्लज्यपणम्याकेले ॥३०॥ मजपुसुरव्याचअहकरि ॥ राजेनाचतिचराचरि ॥ लोमी वैश्यचे अहवदि ॥ श्वाना
 चेपरिवतली ॥३२॥ जैसेवान्नर गारड्याचे ॥ तेसास्त्रीयेचनिउदनाचे ॥ मास्याचक्रवतिपणाचे ॥ अतिनियसाचे फळ
 झाले ॥३३॥ सकळराजमजरेतिसमान ॥ भुपति सदावदीतिचरण ॥ तोमिसालोस्त्रीअधिना ॥ हीनदिनअतिरक ॥३४॥
 राखतास्त्रीयेचारसंगप्रेम ॥ पायापडणहे अनुचितकर्म ॥ अणतिजेजकोसैजनसकाम ॥ हेचिधाडी परमकाम
 चि ॥३५॥ वलयाकोतमिचक्रवति ॥ तोहीयोषीताघातलोअवति ॥ याचीअवतीचिस्थिति ॥ स्वमुखभुपतिअनुव
 द ॥३६॥ ॥ श्लोक ॥ सपरिछद्माल्मानं हित्वा तृणमहेद्वरं ॥ यातिस्त्रियचान्वगमं नग्नउन्मत्तवदुदन् ॥३७॥
 टीका ॥ केवळमायोसोकोरेभम ॥ यालागीप्रमदास्त्रीचेनाम ॥ संगेठकीलेउत्तमातम ॥ स्त्रीसंगमवाढवता ॥३८॥
 प्रमदाअवरेअंककार ॥ हेमायेचेसोलीवसार ॥ येथभुललेथोरधार ॥ मीहीपामरस्त्रीसंगे ॥३९॥ मासीचमज
 कर्ण ॥ दितेसेसेरेन्यगानी ॥ उर्वस्त्रीवैश्याकामाचारिणि ॥ जेबहुजनिभोगीली ॥४०॥ धर्मपत्नीस्त्रीभोगीताका
 म ॥ सहसानात्रीनास्वधर्म ॥ मजवोटवलेसेदुष्टकर्म ॥ वैशास्त्रीपरमभुललो ॥४१॥ परदाराअभीकारसिति ॥
 तेअवश्यनरकाजाति ॥ मास्वदाराकामासकी ॥ तेथहीअधोगतिसोडीना ॥४२॥ स्त्रियाभुलविलेहरिदारा ॥ स्त्रीया
 भुलविलेऋषेश्वर ॥ स्त्रीयाभुलविलेधारधार ॥ मीहीकीकरस्त्रियाकेलो ॥४३॥ राज्यअणि राजवैभव ॥ वैश्येअधी
 नकेलेसर्व ॥ याहुनकेलेअपूर्व ॥ तीलागीजीवअपिला ॥४४॥ मिनाजवर्यामुगुटमणी ॥ तोदासहालोतिचेर
 रणी ॥ बापकंदपीकरणि ॥ केलाकामिनिअधीन ॥४५॥ हेहीयामजराजश्रराते ॥ वैश्येनेहाणोनीलातेउपे
 क्षनियातृणवंते ॥ निघालीनिश्चीतेसांडोनि ॥४६॥ तीराजातादेखोनिपुढे ॥ मिनागवाधावलेवडुसवडे ॥ लम

र
 रतीयकामासकल ॥ मीसर्वस्वभुलला आतापिभुललेपणचिकर
 अनुभावास्वरेवते ॥४७॥

असाठो निया रडो ॥ तरिते मज कडे पाहू ना ॥४७॥ जे वि का लागे महु हुत ॥ ना तरि पिशाच जे से उन्मत्त ॥
 ते वि ना गवा धावे रडत ॥ तरिति चेचिन द्रव्य ना ॥४८॥ तरि रडत पडत अडखळत ॥ प्रीनि लज ती मागे धावत ॥ मा
 से प्रो हाचा अति अनर्था ॥ उपमान गस्ता मज साता ॥४९॥ श्लोक ॥ कुतस्तस्यानुभवः स्यात्ते जइ शिखमेव वा
 यो न्वगच्छ विप्रियं याती खरवसादताडिता ॥५०॥ गीका ॥ प्री महत्वं राजराजे श्वरं ॥ मागे धावे होउनि किं
 रू ॥ तरिते न करि अंगीकार ॥ जे वि वो संडी खर खरि जे सी ॥५१॥ जे वि खरि दे खो निया खरि ॥ धावो नि करि अत्या
 दरु ॥ यरि उपेक्ष नि करि मार ॥ अति नि खु रू ला ताचा ॥५२॥ ति-या लागता लागता माथा ॥ खरु नि घे ना मा गुता ॥ खार रा
 रे सी मुखता ॥ मासे अंगी सर्व धा बाण ली ॥५३॥ स्त्री उदास काम दृष्टी ॥ प्री असक्त लागे पाटि ॥ मासा समर्थ पणा चि गो
 ठी ॥ सागता पोटी मी लोजे ॥५४॥ ऐसे स्त्री काम ज्याचे मन ॥ याचे योग याग अनुष्ठान ॥ आवधे चि वृथा जाण ॥ त्रिनि
 रूपण निरूपि ॥५५॥ श्लोक ॥ किं विद्ययां कित सागे न श्रुते न वा किं विविक्ते न मौने न मन्त्री भिर्यस्य मनो हत
 ॥५६॥ गीका ॥ स्त्री काम ज्याचे मन याची वृथा विद्या वृथा श्रवण ॥ वृथा तप वृथा ध्यान ॥ याग मुंडन ते वृथा ॥५७॥
 वृथा एकांत सेवन ॥ वृथा जाण त्यागाचे मौन ॥ राखे माजी के ल हवण ते सं अनुष्ठान स्त्री काम ५७ कामासक्त त्याचे चि
 त्त ॥ याचे सकळ हीने मयर्थ ॥ आपुले पूर्व वृत्त निरित ॥ अनुताप युक्त नृप बोले ॥५८॥ श्लोक ॥ स्वार्थ स्याको विरधि
 द्या मूर्ख पडित मानिनं ॥ योऽहं प्री श्वरतां प्राप्य मन्त्री भिर्गो खरव जिजत ॥५९॥ गीका ॥ चहु पुरर्षा धिचि अधीष्ट
 न नर देह परम पावण ॥ जेणे देह करिता भजन ॥ ब्रह्म समांत न पाविजे ॥५९॥ नर देही चाक्षण क्षण ॥ समूळ निर्दली ज
 म मरण ॥ भावे करिता हरि स्मरण ॥ महापापे जाण निरुळ मि ॥६०॥ यानरे देहाचि लाहो नि प्राप्ती ॥ नरवयसा
 तीच कव ॥ त्या मासी जे को जळा माही रथी ति ॥ जे वैश्य प्रतिभु तें ॥६१॥ मानी श्रुत मोस ज्ञान ॥ परि अशा
 ना हुनि अशा ॥ जेणे चि ज र्थ साधन ॥ हे मूर्ख पण पे मासे ॥६२॥ वैश्य अधीन मी सा लो ॥६३॥

५०
 प्रीनि लज ती मागे धावत ॥ मा
 से प्रो हाचा अति अनर्था ॥ उपमान गस्ता मज साता ॥४९॥
 यो न्वगच्छ विप्रियं याती खरवसादताडिता ॥५०॥
 प्री महत्वं राजराजे श्वरं ॥ मागे धावे होउनि किं
 रू ॥ तरिते न करि अंगीकार ॥ जे वि वो संडी खर खरि जे सी ॥५१॥
 जे वि खरि दे खो निया खरि ॥ धावो नि करि अत्या
 दरु ॥ यरि उपेक्ष नि करि मार ॥ अति नि खु रू ला ताचा ॥५२॥
 ति-या लागता लागता माथा ॥ खरु नि घे ना मा गुता ॥ खार रा
 रे सी मुखता ॥ मासे अंगी सर्व धा बाण ली ॥५३॥
 स्त्री उदास काम दृष्टी ॥ प्री असक्त लागे पाटि ॥ मासा समर्थ पणा चि गो
 ठी ॥ सागता पोटी मी लोजे ॥५४॥
 ऐसे स्त्री काम ज्याचे मन ॥ याचे योग याग अनुष्ठान ॥ आवधे चि वृथा जाण ॥ त्रिनि
 रूपण निरूपि ॥५५॥
 श्लोक ॥ किं विद्ययां कित सागे न श्रुते न वा किं विविक्ते न मौने न मन्त्री भिर्यस्य मनो हत
 ॥५६॥
 गीका ॥ स्त्री काम ज्याचे मन याची वृथा विद्या वृथा श्रवण ॥ वृथा तप वृथा ध्यान ॥ याग मुंडन ते वृथा ॥५७॥
 वृथा एकांत सेवन ॥ वृथा जाण त्यागाचे मौन ॥ राखे माजी के ल हवण ते सं अनुष्ठान स्त्री काम ५७ कामासक्त त्याचे चि
 त्त ॥ याचे सकळ हीने मयर्थ ॥ आपुले पूर्व वृत्त निरित ॥ अनुताप युक्त नृप बोले ॥५८॥
 श्लोक ॥ स्वार्थ स्याको विरधि
 द्या मूर्ख पडित मानिनं ॥ योऽहं प्री श्वरतां प्राप्य मन्त्री भिर्गो खरव जिजत ॥५९॥
 गीका ॥ चहु पुरर्षा धिचि अधीष्ट
 न नर देह परम पावण ॥ जेणे देह करिता भजन ॥ ब्रह्म समांत न पाविजे ॥५९॥
 नर देही चाक्षण क्षण ॥ समूळ निर्दली ज
 म मरण ॥ भावे करिता हरि स्मरण ॥ महापापे जाण निरुळ मि ॥६०॥
 यानरे देहाचि लाहो नि प्राप्ती ॥ नरवयसा
 तीच कव ॥ त्या मासी जे को जळा माही रथी ति ॥ जे वैश्य प्रतिभु तें ॥६१॥
 मानी श्रुत मोस ज्ञान ॥ परि अशा
 ना हुनि अशा ॥ जेणे चि ज र्थ साधन ॥ हे मूर्ख पण पे मासे ॥६२॥
 वैश्य अधीन मी सा लो ॥६३॥

नि नर देहनि धान ॥ म्यादे ही धरि ला क्षाना भीमान ॥ न करि निज स्वार्थ रस धरि ह्ये मुखे पूर्ण पे मारस ॥ ६३ ॥
 जैसा गाथी मागे काम युक्त ॥ धावता वै लान मानि अनर्थ ॥ का खरि मागे खर धावत ॥ ते सा कामासक्त मी नित
 उंजे ॥ ६४ ॥ खरि खरास हाणित्वा ताडे ॥ तरितो धसे पुढे पुढे ॥ तेसा मिही वै श्ये कडे ॥ काम के वाडे भू ल लो ॥ ६५ ॥
 काम भोगात विरक्ती ॥ ऐसे मुखे विवेकी बोळति ॥ ते अधः पाती घालीति ॥ हे मज प्रति तिस्ये साती ॥ ६६ ॥
 ॥ श्लोक ॥ सवतो वर्ष पूगान्मे उर्वर्या अधरासवं ॥ न तृप्य त्यात्मभूः कामो वहिराहुति भिर्यथा ॥ १४ ॥
 ॥ टीका ॥ सत्य युगीचे आयुष्य मासे ॥ ऐश्वर्य सार्व भोग राजे ॥ उर्वरी सर्व मडुण काजे ॥ स्वर्ग समाजे भोगीता
 ॥ ६७ ॥ भोगीता लोट त्या वर्ष कोटि ॥ परिविरक्तीचि नाठ वे गोटी ॥ मा वै राग्य भोगा शो वरि ॥ हे मिथ्या चाव रि मूर्खोचि ॥
 ॥ ६८ ॥ स्त्रियेचे लुणति अधरा मृत ॥ ते ही मुखे गानि श्चीत ॥ ते उन्मार मद्य धा धी ॥ अधिके चित्त भ्रामक ॥ ६९ ॥ वनि
 ता अधपान गोटी ॥ या पुढे सकळ मद्ये वा पुडी ॥ तकाळ अनार्थ पाडी ॥ निज स्वार्थ कोडी ना शक ॥ ७० ॥ घाली ताको
 टी पृता अहुति ॥ उगीसी कदान के तृपी ॥ ते विरणिता कामासक्ति ॥ कदा विरक्ति उपजेना ॥ ७१ ॥ ऐसा अशुश्लोकी
 अनुताप ॥ स्वये बोळो निया नृप ॥ हृद हर्को उंपे जे विवेक रिप ॥ जेणे हाके कंदर्प ते स्मरले ॥ ७२ ॥ सकामासी विषय त्या
 गीता ॥ वासना न त्यागे सर्वथा ॥ का अदरे विषय भोगीता ॥ विरक्ति सर्वथा उपजेना ॥ ७३ ॥ ऐश्वर्य अर्थिया उपावो
 विचारो निवो लशको ॥ काम त्या गाचा अग्नि प्रावो ॥ साचार पाहा हा संबोधी ॥ ७४ ॥ ॥ श्लोक ॥ पूश्वत्सा पहत चित्तं
 क्रान्दन्यो मोचितुं प्रभुः ॥ ७५ ॥ ॥ गीता ॥ पुरुष स्त्री सदा अनु रागा
 परिसरु सान करेव प्रसंग ॥ या सी पुश्वती चा घटुत्सा संगा ॥ ते बाधी नित्तग हाव भावि ॥ ७५ ॥ पुश्वतीचे कगक्ष गु
 ण ॥ तेचि पुरुषासी दृढ बंधन ॥ स्त्री काम बंधन सोडविकोण ॥ एक नारायणा वाचुनी ॥ ७६ ॥ कामिनि कामापासुनि

भोग

५

निर्मुक्तं कर्तव्यं ईश्वरसमर्थं ॥ जोषा उगाराम भगवत ॥ तो स्त्रीनिश्चीतसोडविता ॥ ७७ ॥ मायागुणे
 कामसंचार ॥ उगाविद्यावाट विसाचार ॥ मायानियता जो ईश्वर ॥ तो कामकरनिवारि ॥ ७८ ॥ स्वरूपपीरमण
 आराम ॥ एसा जो का आत्माराम ॥ तो निवारिसकळ काम ॥ करविभ्रमनिजात्मा ॥ ७९ ॥ जो भोगभोगुनिआभो
 क्त ॥ त्या वारणनिघात्मा अनंता ॥ बांधून शके विषयावस्ता ॥ स्त्रीसंगी सोडविता तो एक ॥ ८० ॥ जो निवारिअधोग
 ति ॥ अघोक्षज असता भक्तपति ॥ वारणनिघात्मातयानिश्चीति ॥ कामासक्तीनिवारे ॥ ८१ ॥ राजा कामासक्तिअति
 भ्राशता ॥ बाह्यविषयविषयी उदास हाता ॥ त्याचा वासना कामजो उरता ॥ तो नवजेत्या गीतायाचेनि ॥ ८२ ॥ सर्वभोवे सी
 संपूर्ण ॥ हरि सीरिघातीया वारण ॥ सकळ कामाचे निदळण ॥ सहजे जाण स्वये होय ॥ ८३ ॥ एकाचामद निश्चीति ॥ करि
 ता श्रुतिवाक्य विसती ॥ यजीता ईद्र दिदेवा प्रति ॥ काम निवृत्ति हृदस्थ ॥ ८४ ॥ ऐसे बोळति जे सक्षान ॥ ते सर्वथा गा आक्षान ॥
 हरि सीनरिघता वारण ॥ कामसंचरण सरेणा ॥ ८५ ॥ ईद्रा दिदेव कामासक्ती ॥ विटबळे नेणे कीति ॥ त्याचे निभजने काम
 निवृत्ति ॥ जे म्हणति ते अतिमूर्ख ॥ ८६ ॥ श्लोक ॥ बोधितस्यापि दिव्यामे स्तुतवा क्यवदुर्मतेः ॥ मनो गतो महा माहो
 नाप या लजितात्मनः ॥ ८७ ॥ शिका ॥ प्रत्यक्षम्या याग करणे ॥ ईद्रा दिदेवा ते यजुने ॥ उर्वशीसभोग त्वाधुने ॥ अतिदुः
 र्खी जाणमी सातौ ॥ ८८ ॥ काम्यकर्म होई तसुखे ॥ तेवोळण समूळ ठटिके ॥ काम्यकर्म अतिदुःखे ॥ लेनणतिमूर्ख
 सकर्म ॥ ८९ ॥ नारायण उरशी जन्मली ॥ यानाव उर्वशी नाव पावली ॥ त्यामज श्रुतिवाक्य बोधिली ॥ निःकामबो
 ली अतिशुध ॥ ९० ॥ एकता श्रुतिनिष्कामबोली ॥ मासी नवचे सकर्म भुली ॥ जवगे विदकृपानाहीकिली ॥ तव कामाचि
 भूली सुटेना ॥ ९१ ॥ भोवहारि सी धरित्ता वारण ॥ हृद प्रगटे नारायण ॥ तेहा सर्वकामे सहजे जाण ॥ जातिपळो न हृद
 जस्थ ॥ ९२ ॥ उर्वशी कामसंभे जाण ॥ थोर कष्टले मिआपण ॥ असो नति वा अपराधकोण ॥ मीही हरिचे स्मरण विसर

तो

लो ॥१२॥ जरि मिकरितो हरिचे स्मरण ॥ तरि काम वापुडी बाधिकोण ॥ मज माजी असता उगाटवण ॥ तेथ तु छ जा
 ण उर्वशी ॥१३॥ ॥ श्लोक ॥ किमेतया नोपकृतं रज्जा सर्पचेतसः ॥ रज्जुस्वरूपा विदुषो योऽहं यदजितेन्द्रियः ॥१७॥
 टीका ॥ मूढमतिचा प्रबोध ॥ मानि उर्वशीचा अपराध ॥ विवेकपाहाता शुद्ध ॥ मिचे मतिमदसकाम ॥१४॥ उर्वशीदेखता दृष्टी
 मी कामासक्तक्षालोपोदि ॥ माक्षीयेकपरते स्मृति ॥ मज म्यात्रोवरीना डीको ॥१५॥ जे विसाज वेळे पडोतादोर ॥ शेडा सर्पभा
 रेंथोर ॥ तवनाही केळानिर्धार ॥ तव महाअजगत्प्रयासक ॥१६॥ तेणें सर्पभयत्तवडसवडी ॥ पळो जातापैतान
 डी ॥ दुपावला पडली आडी ॥ त्याचि कल्मणा नाडीतयासी ॥१७॥ तेवि माक्षीये कामभ्राति ॥ उर्वशीसंदर युवति ॥ यथ
 माक्षीये कामासक्ति ॥ सरतरती भुललो ॥१८॥ यापरि मी अ विवेकात्मा ॥ भुललो उर्वशीच्या कामा ॥ तीवरि कोपणे जे आ
 त्मा ॥ हेचि अधर्माचे मूळ ॥१९॥ दृष्टी देखता कामिनि ॥ कामासक्तते अति मरणी ॥ विवेकीयापोहण घाणि ॥ नरकमा
 थमिते कांता ॥२०॥ जेवि कृकराविष्टचि प्रीति ॥ तेविसकामा कामिनिचीरती ॥ विवेकेदखुनिधुंकीति ॥ श्लोकार्थी नृ
 पकेरु ॥३॥ ॥ श्लोक ॥ कायं मत्कीमसः कायोदोर्गध्यायामको सुचिः ॥ क गुणाः सोमनस्यायायध्या
 सोविद्ययाकृतः ॥१७॥ ॥ टीका ॥ स्त्रीपुरुषनामा भोदान ॥ केवळे हासीचि जाण ॥ ते स्त्रीदेहीपाहाता गुण ॥ मत्की
 णपणअयत ॥२॥ जेनिचन व्याविगळा चिखाणी ॥ जेरजस्वलेचि प्रवाहनाणि ॥ जेगादुर्गधाचिपहोणि ॥ जेउतलीतानि
 विष्टेचि ॥ जेकादोषाचे जन्मस्थान ॥ जेविकल्पाचे अयतन ॥ जेमहादुःखाचे भोजन ॥ अधःपतनजीचेनि ॥ जेवा
 दृविअतिउद्योग ॥ जीचेनि मनासी लोकेक्षयरोग ॥ जीचा बाधक अगसंग ॥ अति नितगानि यत्ने ॥५॥ जेविनिचाचा काट
 परा ॥ गळा आडकल्पा माजरा ॥ तेरिगोनि शुचियाघरा ॥ नानारस पात्र विटाळी ॥६॥ तेविकामिमिचिसंगति ॥ गळापडली
 ननिघमागुति ॥ कामिनि कामकामासकी ॥ नेणे कितिविष्टविले ॥७॥ तेमाजरजे धेघाती मुख ॥ तेथकाटपरारोधी देख

ते विस्त्रीसेगे अतिदुःख ॥ मानिति सुखसकाम ॥ ८ ॥ मृगजळीक मळमनोहर ॥ ते से आगणावदन सुंदर ॥ स
 स्मितचोर सकुमार ॥ सकामनर वानिति ॥ ९ ॥ आगणावदनाचिनिजस्थीति ॥ निखळत्रोबुडा चितधवस्ती ॥ तेमुखचंद्र
 सीउपमेति ॥ जेविआमृतप्रणति विखाते ॥ १० ॥ वनिता अधरिसेरलाळ ॥ तेप्रणति आधरामृतदेवळ ॥ बापाउगवि
 द्यचेबळ ॥ ११ ॥ ललेसकळकराकर ॥ १२ ॥ स्त्रीपुरुषी आत्मा एक ॥ स्त्रीरूपतेथे आविद्यक ॥ मीस्त्रीकामि भुललेलोक
 बापकवति कमायेचे ॥ १३ ॥ आत्माभोका प्रणावास्त्री संभोगी ॥ तवतोनित्यमुक्त अरसंगी ॥ देहभोका प्रणावास्त्री संभोगी ॥
 तवदेहाचे आंगीजडव ॥ १४ ॥ तेथविषयेभोगासी कारण ॥ मुख्यवदेहाभीमान ॥ यादेहाभीमानासी जाण ॥ बहुत
 जाणविभागी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ पित्रोः किं स्यनुभार्यायाः स्वामिनो गेः स्वगृध्रयोः ॥ किं मात्मन किं सहस्रमिति योनावसी
 येते ॥ १६ ॥ टीका ॥ गर्भधारणपोषण ॥ स्वयंभ्रमोनिथा आपण ॥ माताकरिपरिपालने ॥ तोहादेह जाणमातेचा ॥ १७ ॥
 एकलेपणेमाता ॥ स्यन्यीनदेखपुत्रकथा ॥ जोनिजविर्यनिक्षेपिता ॥ तोहादेहोपित्याचा ॥ १८ ॥ जेआग्निब्राह्मणसा
 क्षकरुनि ॥ भार्याआणिलीभाकदेउनि ॥ जेजोवीबसमर्पानि ॥ सेवलागेनि विनटली ॥ १९ ॥ जीसीयाचेनि सुख
 मृगारा ॥ जीसीयाचेनि ऐहिक्यपौर ॥ ऐसासुक्षमकरिनाविचार ॥ देहोसाचार स्त्रीयेचा ॥ २० ॥ यादेहाचिआवश्य
 के ॥ सहदेवधुजेकासखे ॥ देहाचेनिसुखावति सुखे ॥ देहयेकेपाखेयाधाही ॥ २१ ॥ स्वयेद्येउनिवेतन ॥ देहोवि
 कीला आपण ॥ आहोविणनवचक्षण ॥ देहोजाणस्वामिचा ॥ २२ ॥ श्वानसृगाळगिधाचेखोदैजे ॥ तरिदेहो
 याचाप्रणीजे ॥ जीवास्तवदेहीकर्मनीपजे ॥ यात्मागीदेहबोलीजेजीवाचा ॥ २३ ॥ पितामातास्त्रीपुत्रस्वजन
 देहाचेआवश्यकरितादहन ॥ यात्मागीदेहअग्नीचापूर्ण ॥ विचक्षणबोळति ॥ २४ ॥ यापरिदेहाचेजाण ॥ तेथमी
 भोकाहाआभीमाने मूर्खवे ॥ २५ ॥ येथमिथेकमीविशीष्टभोका ॥ मासादेहऐसीममता ॥ हाचिजाणतलता ॥ अधः
 पातानेतसे ॥ २६ ॥ ॥ श्लोक ॥ तस्मिन्कलेवरमध्येतुच्छनिष्ठेविषज्जते ॥ अहोसुभद्रं सनेसंस्तस्मि

मार्कण्डेय

विभागीअसताअरजन

तंचमुखं स्वयं ॥२०॥ ॥टीका॥ देहोतित का आ शौचकर ॥ स्यात्स्त्रीदेह उ ति अपवित्रा ॥ केवळ विगळाचे
 पात्र ॥ निरंतर द्रव रूप ॥ २५ ॥ स्वयेभोक्ता अतिकुश्लीत ॥ ऐ स अविवेकी कामासक्त ॥ कामीनि कामी लो लंगत ॥ ते मूर्ख
 वानित स्त्री याते ॥ २६ ॥ अहो हे सुंदर करे ख ॥ चंद्रवदन उ न ति स्त मुख ॥ सरळ शोभे ना शीक ॥ सुभग देख सक मार २७
 रे शीय सुंदर स्वियेते ॥ पावलो आ ह्री स भाग्येथ ॥ ऐ सा कामासक्त चिने ॥ भूलकी आते श्रमदासी ॥ २८ ॥ स्त्री देहाचे
 विवंचने ॥ विव चिता बोका राय मने ॥ जळा स्त्रीयचे नि ध जीने ॥ मूर्ख र मणे ते रायी ॥ २९ ॥ ॥ श्लोक ॥ **वृक मं**
सर धिर स्नायु मेदा मज्जा ॥ स्वयं संहता ॥ विण मूत्र पूये र मतां कृ मी णां कियं द तरं ॥३०॥ ॥टीका॥
 स्त्री देहाचा उभा रा ॥ केवळ अस्थी चा पांजरा ॥ त्याचे उावरणे ते स्नायु शिरा ॥ बांधो निखरा दृढ के ला ॥ ३० ॥
 तेथ रूधी रमासाचे काळ वण ॥ करु नि प जरा ती पिं ला पूर्ण ॥ अस्थी व ला जे वेष्टण ॥ मज्जा झण ति ज्या ना व ॥ ३१ ॥
 आस्थी माजी लसंब दु त्या ना व बो ली जे म दु ॥ वरि च र्म म ठि ले रू ब दु ॥ त्वा शुद्धी त्या ना व ॥ ३२ ॥ उा दे हा मा जी
 सा ट व ण ॥ विद्या मुत्रे परि पूर्ण ॥ ते स्त्री दे ही ज्याचे स्मरण ॥ ते कृ मी जाण नर रूपे ॥ ३३ ॥ विष्टे मा जी कृ मी च र ति
 तै सी स्त्री दे ही ज्या अस ति ॥ ते ही कृ मी प्राय नि श्ची ति ॥ स दे ह ये अर्थी असे ना ॥ ३४ ॥ वणि ता दे ह या परि यथ ॥ विधा
 रि ता अ ति कु श्ली त ॥ तो व र त्रां का ती शो भी त ॥ कुरु नि षा अस क्त न र हो ति ॥ ३५ ॥ धं ग पार धी पा द्रा प सरि ॥ त्या व रि तो
 मृ गा ते ध रि ॥ पु रू ष स्त्री य ते श्रु गारि ॥ ते पा श भि त रि स्वय आ ड के ॥ ३६ ॥ या ला गी स्त्री या चि सं ग ति ॥ क दान कर
 वि वि र कि ॥ गृ ह र ये सां डा वि आ स ती ॥ ये चि अ र्थी नृ प बो ले ॥ ३७ ॥ ॥ श्लोक ॥ **अथापि नो प स ज्जे त स्त्री षु**
स्त्रे ण षु चार्थ वि त ॥ वि ष ये द्रिय सं थो गा त मनः स्व भ्य ति ना न्य था ॥ २२ ॥ ॥टीका॥ स्त्री देह शोभ
 नीय अस ता ॥ तरि व स्त्रे वि ण शो भ ता ॥ तो उ ति नि द्य क श्ची त ता ॥ उ घ ड सर्व धा शो भे ना ॥ ३८ ॥ या ला गी व स्त्रा भ र णी
 दे ह गु डी ति कामी नि ॥ जे वि मै द ब्रा ह्म ण पा णि ॥ वि र वां सू नि धा त क ॥ ३९ ॥ तै री स्त्री या चि सं ग ति ॥ से वा त्वा वि ना ना यु

की ॥ दोखीसगे पाडी उधः पाति ॥ तेथ विरक्ति नेवे चोवे ॥ ४० ॥ जरि स्त्रीये चिविरक्त स्थिति ॥ तरि साधाकि न करादि
संगति ॥ अग्नीसगे घृते द्रवति ॥ ते वि विकारे वृत्ति स्त्रीसंगे ॥ ४१ ॥ अमृतक्षुणुनि स्वाता विस्व ॥ अत्रयमरण आणि दे
ख ॥ स्त्रीमानुनि सात्वीक ॥ सेविता दुःख भोगवि ॥ ४२ ॥ अग्नीमाजी घृता चिवस्ती ॥ जरि बहु काम निर्वाहति ॥ तरि स्त्री
संगे परमार्थी ॥ निजात्म स्थीति पावते ॥ ४३ ॥ घृते वे चत्सा वर्षे शात्मी साठी ॥ तरि अग्नीसंगे द्रव उ पजे घटि ॥ तेवि प्र
मदासंग परिपाठि ॥ वाधी की ही उठि अति कामु ॥ ४४ ॥ जरि कापुर आग्नी आत ॥ नांदो ला हाता न पोळत ॥ तेवि स्त्री
संग परमार्थी ॥ पावत समस्त परब्रह्म ॥ ४५ ॥ अग्नीपो वाधरि हाति ॥ तैसी स्त्रीयाचि संगति ॥ संगे वाढ विधि सक्ति ॥ पा
डी अनार्थी पुरुषाते ॥ ४६ ॥ स्त्रियपरिसस्त्रेण ॥ संगतिमिनती याजाण ॥ कोठी अनार्थोचे भाजन ॥ अधः पतन तत्संगे ॥ ४७ ॥
तैसी स्त्रौणे सि सात्मा भेदि ॥ ब्रह्मानंद स्तखाचा पोठी ॥ ए रथा विरक्ता प्रभवि गोठी ॥ करि उठा उठि स्त्रीकाम ॥ ४८ ॥ तेथ स्व
दारा अगणि परदारा ॥ या करुने दिवि चारा ॥ प्रवर्तने स्य द्वा चारा ॥ स्त्रेण स्वरा आति घाति ॥ ४९ ॥ स्त्रेण जेथ प्रवेत्ता द्वा
तेथ अन्या चार वेळी गेला ॥ अधर्मसंवांगी फुलला ॥ वाधक फळला अनर्थ फळी ॥ ५० ॥ यात्मागी जो परमार्थी ॥
तेणे स्त्रेणाचि संगति ॥ सर्वधान धरा विहाति ॥ पाडी अनार्थी तो संग ॥ ५१ ॥ मुख्यस्त्रेण चिवाजीला उगोह ॥ तेथ स्त्रीसं
ग कोटे राहो ॥ हे संगति चि पाहो ॥ सेव्य नो हे परमार्थी ॥ ५२ ॥ यात्मागी साधकि आपण ॥ स्त्री निरिसंभाषण ॥ सर्वधान करावे
जाण ॥ एकांत कील नन कधि होवे ॥ ५३ ॥ छणशी विवेकी जो आहे ॥ त्यासी संग करिकाय ॥ स्त्रीसंग रात व उपाय ॥ स्त्री
शीले पाहो सुखा नि ॥ ५४ ॥ पराशारासी अर्धघडी ॥ नावे सीमिनती नावडी ॥ ते अर्धघटि घटिके सारी रोकडी ॥ अंगी
परवडी वाजली ॥ ५५ ॥ ऋषि शृंग अति तापसी ॥ तो ही वशा सात्वा वैश्यसी ॥ इतराचि गोली कायसी ॥ मुख्य माहादेवासी
शुलबिले ॥ ५६ ॥ विषय ईद्रियाचे संगति ॥ अत्रय क्षोभे चि न वृत्ति ॥ तेथ सज्ञा नाही बांधी जति ॥ साकोण गति अज्ञाना ॥ ५७ ॥
हे ही असो उपपत्ति ॥ न साहे स्त्रीयाचि संगति ॥ कामक्षोभे कांति ॥ तेचि विषदाधी हि रि बोले ॥ ५८ ॥ अत्रय अत्रय

दृष्टताभ्यां द्रावन्नभावउपजायते ॥ असंप्रयुजतः प्राणान् शान्तिसिद्धिं मितं मनः ॥ २३ ॥ यिका

जेदेखीलेकीलेनाही ॥ ऐसीवाविषयाचेमार्गी ॥ पुरुषाचेमनपाही ॥ सर्वथाकहीशोभेना ॥ ५९ ॥ जेपूर्वभक्तविषयअ
सति ॥ तेचिस्मरणहातीयाचिनि ॥ कामउद्रेकेशोभेतेति ॥ नसतासंगतिक्लियेचि ॥ ६० ॥ एवंपूर्वापरविषयासती ॥ पु
रुषासोबाधकनिष्ठीति ॥ तोवेसत्माहीएकांति ॥ वासनासंस्कारेतेसकामशोभे ॥ ६१ ॥ पूर्वदिवसीचिषकान्ने ॥ जेदेवि
त्तीअतियत्ने ॥ तीनकरिताहीराधने ॥ पाहाउभक्षणेस्वयेजेवि ॥ ६२ ॥ तेविवासनासंविस्थतकाम ॥ पुरुषासकरिस
काम ॥ कामेशोभेपाडीभ्रम ॥ कर्माकर्मस्मरेण ॥ ६३ ॥ एवंवासनाकामसंगति ॥ बाधकहोयपरमार्गी ॥ यात्लागीसाधकि
समस्ती ॥ स्त्रीकामाचिसक्तीयागावि ॥ ६४ ॥ मनीहोभत्माकामासति ॥ साधकेतेथकरावियुक्ति ॥ आवराव्यावाह्यद्रीय
एति ॥ तैमनासीज्ञातिहकहोये ॥ ६५ ॥ कर्मद्वियीराखण ॥ दृढवैराग्येदेविलेयाजाण ॥ मनेशोभत्माकामपूर्ण ॥ उगापत्त्या
उगापणउपशामे ॥ ६६ ॥ जेणेपडीजअनर्थी ॥ तियागाविसंगति ॥ संगत्यागाचिनिजस्थीति ॥ दृढलोकाधीनृपकोळे ॥ ६७ ॥
॥ तस्मात्संगनभं कर्तव्यः स्त्रीषु स्त्रोणेषु चेद्रियैः ॥ विदवां च्यायविश्रव्यः षड्वर्गः किमुमादृशाम् ॥ २४ ॥

॥ गीका ॥ ॥ जेथसहानाउरिदळ ॥ सकामभुलवितक्काळ ॥ ऐसास्त्रीसंगअनर्थशीळ ॥ त्याहुनिप्रवळक्येणाचा ॥ ६८ ॥ या
त्लागीकर्मद्वियीचेरथीति ॥ स्त्रीआणिक्रानाचिसंगति ॥ घडोनेदाविपरमार्गी ॥ जेनिजस्मार्थीसाधका ॥ ६९ ॥ जरिविपरशोभ
तमन ॥ तरिद्रीयआवराविउगापण ॥ मगमनिचाविषीजाण ॥ मनिचिउगापणस्वयेविरे ॥ ७० ॥ निकटविषयस्त्रीसंगति ॥
मनशोभेविषयासक्ति ॥ क्षणार्धस्त्रीसंगप्राप्ती ॥ पडलेअनर्थीसहान ॥ ७१ ॥ स्त्रीदिर्शनैकामासक्त ॥ देवेद्रुहात्काभ्रगा
कीत ॥ चद्रकळकियायथ ॥ केलामिष्ठीतगुरूपत्या ॥ ७२ ॥ सौभरितपस्वीतपयुक्त ॥ तोमछमैथनारतवयेथकरनिसां
डीलाकामासक्त ॥ संगअनर्थस्त्रीयचा ॥ ७३ ॥ निजकेन्येचियासंगति ॥ ब्रह्माभुललाकामासक्ति ॥ इतराचिकोणगति ॥ स्व
गअनर्थीस्त्रीयचा ॥ ७४ ॥ कामिनिसंगअतिदारुण ॥ शीवारीहालेलीगपतन ॥ प्रमदासंगेसहान ॥ टकलेजाणमाहा
योगी ॥ ७५ ॥ नारदविनोददृष्टी ॥ कृष्णपत्नीमार्गीतत्मासारि ॥ तोनारदिकेलागंगातरी ॥ तेथजन्मलेपोरिसारपुत्र ॥ ७६ ॥

कौतुक स्थिया प्रतिजाता ॥ सज्ञान पावे बाधकता ॥ मामज सा विख्यामू र्वाचिक थ ॥ कोणवातीति गयी ॥ ७० ॥
 ॥ क्षणार्ध स्त्रीयाचि संगति ॥ सज्ञान टकले ऐश्या रिति ॥ जे स्त्रीसंग विस्वासति ॥ ते दुःखी होति मजरे से ॥ ७१ ॥ या लागी वि
 र्वासता स्त्रीसंगसी ॥ ईद्रीय षड्वर्ग टकि सर्वासी ॥ यथ आवरुनि ईद्रीयासी ॥ सर्वथा स्त्रीयासी त्या गावे ॥ ७२ ॥ त्या गुनि स्त्री
 याचि संगति ॥ उपर मुनि ईद्रीय टति ॥ राजा पावला परम शान्ति ॥ तेचि श्रीपति स्वयसंगे ॥ ७० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ए
 वं ब्रयाग न्ने देव देवं : स उर्वशी लोके मथो विहाय ॥ आत्मानमात्मन्यवगम्य मावे उपरम ज्ञान विधूत मोहः ॥ ७२ ॥
 ॥ जो उर्वशी स्वर्ग भोग पावोनी ॥ ज्या सी देव मानि ति श्रेष्ठ पणि ॥ जो सकळ राजचूडामणी ॥ ज्या सी ये ति लोरा गणि भूपाळ ॥
 ॥ ७२ ॥ एसा पुरुरवाच क्ववति ॥ लोहानि उर्वशी भोग प्राप्ती ॥ स्वर्ग भोगी पावला विरक्ति ॥ सभाग्य नृपति तो एक ॥ ७३ ॥ अत्र
 प्यविषययोगी ॥ बहुते देखीले विरागी ॥ परिप्राप्त स्वर्ग गना भोगी ॥ धन्य विरागी पुरुरवा ॥ ७३ ॥ पुरुरवा ऐसी विरक्ति ॥ नाही
 देखीली आणिका प्रति ॥ धन्य पुरुरवा श्रीजगति ॥ स्वमुखे श्रीपति वाखाणि ॥ ७४ ॥ तेणे अनुतापाच्या अनुष्टिति ॥ निरोनिया नि
 जात्म स्थीति ॥ क्षाळीली कामिनि कामासकी ॥ धूतलानि श्चीति माहामाहो ॥ ७५ ॥ अनुताप अंगी टिअभंग ॥ वैराग्य पुढे देउनि ॥
 योग ॥ विवेक दमिता सांग ॥ काम मोहाचे दाग क्षाळीले खाने ॥ ७६ ॥ जे विसाने पुटि पडे ॥ तुक तुटे वानि चडे ॥ ते विनिजात्म प्रा
 सीनि वाडे ॥ इति वाडे कोडे क्षाळीली ॥ ७७ ॥ ऐसी य अमि शुद्ध निज टति ॥ विवेक वैराग्य संपति ॥ पूर्ण आनुतापाचे स्थीति ॥
 मासी कृपा प्राप्ती पावला ॥ ७८ ॥ माक्षीय कृपे विणकही ॥ कदा आनुताप नुपजे देही ॥ शुद्ध आनुताप ज्याच्या गयी ॥ ते मासी कृ
 पा पाही परिपूर्ण ॥ ७९ ॥ माक्षी कृपा क्षाळी यापूँर्णे जाण ॥ जीव होय ब्रह्म पूर्ण ॥ नीः शेष गेला माना श्रीमान ॥ मितुपण भासेना ॥
 ॥ ८० ॥ तेथ कार्य कर्म आणि कर्ता ॥ भोग्य भोग आणि भोक्ता ॥ दृश्य दर्शन द्रष्टा ॥ त्रिपुटि सर्वथा असेना ॥ ८१ ॥ त्रिगुण त्रिपु
 टिचे कारण ॥ मूळाने भूत निजाज्ञान ॥ ते सद्गुरु रूपे रतव जाण ॥ गेले हारपोन मिथ्यत्व ॥ ८२ ॥ जे विदोराचे साप पण ॥ निघरि
 ता हारपे पूर्ण ॥ ते विगुण सी अविद्या जाण ॥ जो य हारपोन गुरु रूपे ॥ ८३ ॥ सद्गुरु बोधे पाहाता जाण ॥ दिसेना हे ताचे भान ॥ तेथ
 उर्वशी भोगी कोण ॥ राजा खाने दे पूर्ण निवाला ॥ ८४ ॥ राजानि वाला श्री खर सी ॥ मग साडुनिया उर्वशी ॥ त्या जो मिया स्वर्ग लोका सी ॥

११५॥

२३७

निज बोधासीनि घाटा ॥ ९५ ॥ ईतर ज्ञाते स्त्रीयात्यागीति ॥ परियागेना कामासक्ति ॥ तैसी नके गयाचिस्थीति ॥ परमार्थविर
 कीपावला ॥ ९६ ॥ जे परमार्थविरक्ति चेपाठी ॥ कामीनिकामवातानुठी ॥ ब्रह्मानंदे कोदली रचली ॥ स्वानंदपुष्पीनिवाला ॥ ९७ ॥
 एसा सुखरूपे सोहज ॥ मीहोउनिपावला मज ॥ जीणोनिकल्मना कामकाज ॥ नाचतभोजस्वानंदे ॥ ९८ ॥ एसानिश्चयसीनिश्ची
 त ॥ मासेनिजस्वरूपझाला प्रास ॥ तेणेहाशनिहासयथ ॥ निजकस्वार्थगाईला ॥ ९९ ॥ आनुतापभावडीइतिहास ॥ गाताप्रगटे
 पूर्णपेरदा ॥ तेथसहजअविद्यचेनात्रा ॥ निजकस्वैक्षीतिशानिवाला ॥ १०० ॥ यवढीपावावया निजप्राप्ती ॥ त्यागाविकामिनि
 कामासक्ती ॥ मुख्यवधराविरसंगति ॥ हेचिउद्वाप्रतिहरिसंगे ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥ ततोदुःसंगमुख्यसत्सज्जे
 तबुद्धिमान् ॥ सतएतस्यच्छिदंति मनोव्यासंमुक्तिभिः ॥ २६ ॥ ॥ टीका ॥ आवश्ययागाविदुःखसंगता तो
 दुःसंगकोणल्यणसीआता ॥ तरिस्त्रीआणी स्त्रेणआवस्ता ॥ दुःसंगसर्वथाअसेना ॥ २ ॥ जोमानिनावदशास्वर्था
 जोआविश्वासीपरमार्था ॥ ज्यामाजीअतिविकल्मता ॥ तोहीतबतादुसंग ॥ ३ ॥ जोबोलबोलेअतिविरक्ते ॥ हृदई
 असककामरत ॥ कामरोधेदेषायत ॥ तोहीनिश्चीतदुःसंग ॥ ४ ॥ कोस्यधर्मकर्मविनितता ॥ बायदाविसावीकता
 हृदईदोषदर्शिसता ॥ हेदुःसंगताअतिदुष्ट ॥ ५ ॥ जोमुखेबोलेआपण ॥ परिदखेसाधूचेदोषगुण ॥ तेचिसबायेदावि
 उपलक्षण ॥ तोअतिकटिणदुःसंग ॥ ६ ॥ मुख्यअपलीजेसकामता ॥ तोचिदुःसंगसर्वथा ॥ तोकामसमूहया
 गीता ॥ दुसंगतायागीरती ॥ ७ ॥ कामकल्मणेचाजोमेरू ॥ तोचिदुसंगनिधोरू ॥ तेकात्मनायागीजोनरू ॥ यारिती
 संसारसुखरूप ॥ ८ ॥ कामकल्मनायागावयाजाण ॥ मुख्यसत्सगतिचिकोपैरे ॥ संताचेवंदिताश्रीचरण ॥ कल्म
 णाकामजाणउपमेदी ॥ ९ ॥ सगसर्वथाबोधक ॥ ल्यणसीयजवानिःशेष ॥ तरिसंसगनधरितादख ॥ केविसाधक
 सुटतिल ॥ १० ॥ ससंगेविणेजेसाधन ॥ तेचिसाधकादृढबंधन ॥ सत्संगेविणयोगजाण ॥ तेसंपूर्णपाखांड ॥ ११ ॥
 चित्तविषयाचासंमधे ॥ गाठिवैसत्सासुबद्ध ॥ त्याचाकरावयाछेद ॥ विवेकेविषदेनिजसाधू ॥ १२ ॥ संताचासहजगा
 ती ॥ साचाउपदेशाच्यकोठी ॥ देहात्मताजीवगाठी ॥ बोलासाठीछेदिति ॥ १३ ॥ आवेधरिल्माससंगति साधकाभवपा
 शनिर्मुक्ति ॥ यालागीअवश्यबुद्धीमंति ॥ कराविसंगति सज्जनाचि ॥ १४ ॥ यासतलक्षणाचिरथीरती ॥ अतिसाक्षिप्री

२

पति ॥ अदरे सागे उद्धवा प्रति ॥ यथा निगुति निज बोधे ॥ १५ ॥ ॥ श्लोक ॥ संतो नपेशाम चिना व्रणताः स
मदर्शनाः निर्मेमा निरहकारानिदृष्टानिष्यरिगुहाः ॥ २७ ॥ ॥ टीका ॥ साधुचे अमितगुण ॥ त्यातमुख्यत्व अ
च्छलक्षण ॥ निवडुनि सांगे श्रीकृष्ण ॥ ते कोणकोण आवधारि ॥ १६ ॥ प्राप्ताप्रसक्तोभावस्था ॥ बांधून के साधुच्या
चिन्ता ॥ चित्ततुल्य भगवता ॥ निरपेक्षतायानाव ॥ १७ ॥ पैलविषयो मजकावा ॥ ऐसा उगाटव नाटव जीवा ॥ हसा
धूच्या निरपेक्षतेवा ॥ जाण उद्धवा गुणप हीला ॥ १८ ॥ चित्ते चित्तो वेचे तन्य ॥ याचि नावे मची नपेक्षेण ॥ याचि ना
वे निरपेक्षपूर्ण ॥ इतर चिंतन भवबंधू ॥ १९ ॥ निरपेक्षकावयायेथ ॥ जागृति स्वल्प रूषु सी आंत ॥ चिन्मात्री
जडले चित्त ॥ खानाव मची त उद्धवा ॥ २० ॥ कामलोभादि दोषर हीत ॥ परमानदि जडले चित्त ॥ शांति सुख वासे
तेथ ॥ याकागी प्रशांत बोली जे सासी ॥ २१ ॥ जरि प्राणात केला आपकार ॥ तरि दुख न लक्षणे हानर ॥ अपकायिक
रि उपकार ॥ प्रशांति प्रकार यानाव ॥ २२ ॥ जरि त कुनि सर्व नेले ॥ परिक्षोभे न दोष वळे ॥ ते जाण ब्रह्मार्पण शांते ॥ येणे अ
गा अले प्रशांत व ॥ २३ ॥ ब्रह्मभोवचित्तवता ॥ विस्वाने सर्वभूता ॥ कदा विकल्प नानुपजे चित्त ॥ हे प्रशांता गुणाति जा ॥ २४ ॥ ऐसा
हा प्रशांतता गुण ॥ अंगी बाणा वया हे चिकारण ॥ जगीद रे स मदर्शन ॥ अत्र परिपूर्ण शम सम्ये ॥ २५ ॥ जगपा हा ता दि से दि
विषम ॥ विषमी देखे शम ब्रह्म ॥ तो चिराम दर्शी परम ॥ हा गुण निरूपण पै चौथा ॥ २६ ॥ ते सम दृष्टी याव या हाता ॥ भावे भजो
नि भगंवता ॥ निःशेष्य जी ली अहं ममता ॥ हि हि कथा आवधारि ॥ २७ ॥ धरितो दे हांचा आभीमान ॥ ते अहंता गा र वि
मीपणे प्रमता जाण ॥ वाटे सपूर्ण देह संबध्या ॥ २८ ॥ जे वाढती अहं ममता ॥ ते वस्तु विमहादुःखावर्ती ॥ तीचि निवारा वया
निजा वेंस्थौ यथा ॥ मझवे माया गुरुचरणी ॥ २९ ॥ गुरुकृपा सात्कीया पूर्णे ॥ मासे दे हीचे मिपण ॥ ते उकलो निदाविता जाण
जगसपूर्ण मि एक ॥ ३० ॥ जे जे सान थोर दिसे दृष्टी ॥ ते ते आवघे मि चिस्तेली ॥ मास्या मिपणा चिनि जपुली ॥ द्यो हित उठि नैले
३१ ॥ ऐसा मिपणे मी परिपूर्ण ॥ तेथ मी लुणा वया लुणते कोण ॥ नीशषनि माळे मितुपण ॥ निराभीमान यानाव ॥ ३२ ॥ ऐसे मा
से मिपण पा हाता ॥ समूळ हारपती ममता ॥ हे मासे प्रणा वया पुरता ॥ रावरितानुरेचि ॥ ३३ ॥ ते मिपण मि मासे ॥ नुरेचि तुप

१०१
११०

२६

णेसीतुसे। ऐसापरब्रह्माचेनिजे ॥ हालेसहजनिर्मम ॥ ३४ ॥ निर्ममनिराभीमान ॥ तेहेउद्धवागासपूर्ण ॥ पाचवेसाहावेतक्ष
ण ॥ संताचेजाणनिजगुण ॥ ३५ ॥ ऐसानिर्ममनिरहंकार ॥ जेहीउनिठेलेसाचार ॥ त्यादरुदःखडोंगर ॥ अनुमाननवाधी ॥ ३६ ॥
देहअदृक्काचावाठा ॥ लागतासुखदुःखाचासग ॥ तोब्रह्मसुखानेचोहण ॥ देहाचोदृष्टाहोउनिअसे ॥ ३७ ॥ साक्षीमीपणावाहेर
जेममतास्यदरुजेसुरे ॥ तेथेममतापूर्णस्फुरे ॥ तेम्याचिन्मात्रेघोटिली ॥ ३८ ॥ देहासीपदविआलीथोरी ॥ तीश्लाघनाजीवाभी
तशिदेहघोळसीतानरकृद्धारि ॥ तोअनुभरिकेथेना ॥ ३९ ॥ देहव्याघ्रमुखीसापडे ॥ तेणेदुःखेतोनसाकडे ॥ देहपालखीमाजी
चढे ॥ तेवाडेकाडेश्लाघना ॥ ४० ॥ आयाविष्टेवरिपडे ॥ कापालखीमाजीचढे ॥ तेणेपुरुषासुखदुःखजोडे ॥ मुक्तासीतणेपाडेदे
हभोग ॥ ४१ ॥ त्याचेदृष्टीखातीएकाएक ॥ दुःखपणासमुकेदुःख ॥ सुखपणाविसरेसुख ॥ निर्द्वंद्वेखयाहेतु ॥ ४२ ॥ जोनिर्ममनिरा
भीमान ॥ ज्यासीनाहीभेदाभीमान ॥ अभेदिमिथ्याद्वंद्वबंधन ॥ हासातवागुणनिर्द्वंद्व ॥ ४३ ॥ जोनिर्द्वंद्वनिराभीमानपाहाहो
त्यासीमिथ्यासमूळनिजेदेही ॥ तेथेदेहसंमधपरिग्रहो ॥ उरावयागवोमगकेचा ॥ ४४ ॥ स्वप्नेपूमेंधेनोंसीजनधन
रुचीपुत्रासी ॥ नादोनिजोतळेत्यासी ॥ स्वप्नधरवातजागृतारी ॥ तेसासाधूसीसंसार ॥ ४५ ॥ योएवंपरिग्रहोअसोन
साधूअपरिग्रहोपूर्णहेअटवेमुख्यतक्षण ॥ अतर्क्यजाणतयासी ॥ ४६ ॥ साधूपरिग्रहोदिसति ॥ परिनेपरिग्रहीनसति ॥
हचिसंताचिपावायौवेस्थीति ॥ त्याचिनिजभक्तीकरावि ॥ ४७ ॥ हेसाधूचेअष्टतक्षण ॥ तेब्रह्मीचेआकागजाण ॥ कीअ
ष्टमहासीद्धीनिर्गुण ॥ तेअष्टगुणसाधूचे ॥ ४८ ॥ चैतन्यासरोवरिचेकमळ ॥ विकाराळेअष्टदळ ॥ तेहेसंततक्षणकेवळ
स्यांनदशीळसाधूसी ॥ ४९ ॥ एसेहेअष्टमहागुण ॥ सकळभूषणाभूषण ॥ ज्याचेआंगिवानलेपूर्ण ॥ तेसाधूसज्जनअति
शुद्ध ॥ ५० ॥ इतरसंगाचियेप्राप्ती ॥ संगवाधकनिश्चीति ॥ तेसीनकेसंसंगति ॥ संगेछेविअसक्तिदेहसंगा ॥ ५१ ॥ तेथउप
देशानळगेकाही ॥ संगेदेहीकरिविदेही ॥ तेचिसातश्लोकीपाही ॥ संताचिनेवाईहरिसांगे ॥ ५२ ॥ ॥ श्रीक ॥ तेषुनि
यंमहाभागमहाभागैवमकथाः ॥ संभवंतिहितानृणांजुषतांप्रपुनंसधं ॥ २८ ॥ ॥ टिका ॥ ईदपदादिब्र
ह्मसदन ॥ येप्राप्तीनावभाग्यगहन ॥ तिहीससंगासमान ॥ कोट्यांबोजाणतुकेना ॥ ५३ ॥ ऐशीजिकाससंगति ॥ सभा
ग्यभाग्याचेपावति ॥ भगझावेसाधूवर्तति ॥ माशीकथाकिर्तिअनुवादे ॥ ५४ ॥ जेकथाअवचढेकानि ॥ पडताकलिम

चे

१०

माचिधुनि ॥ करुनि सांडी तक्षणी ॥ जे मंगे डुनि पवित्र ॥ ५५ ॥ जेथ माहीनि जकथा गाति ॥ तिथे तेथ पवित्र होशि
ऐशी या भगळ्या कीति ॥ साधूगर्जति सर्वदा ॥ ५६ ॥ स्वये आपण भागे रथी ॥ सर्व हा एसे जीवि चिति ॥ कोणा साधू येजे
मज प्रति ॥ जे मासे पापे जाति निःशेष ॥ ५७ ॥ पार्वति चाहे षमनि ॥ ते बहु पापमज लागुनि ॥ तेही शडे संत चरणि ॥ सकळ पा
पाधुनि संसंगे ॥ ५८ ॥ काज्याचे मुखी हरि नाम किंति ॥ त्याचे पाप जे मज माजीयेति ॥ ते सकळ पापे मासी जाति ॥ ऐसे भागे
रथी स्वये बोले ॥ ५९ ॥ ऐशी संता चिसंगति ॥ सदा वाछी भागे रथी ॥ अबचे ठे गेली यास ता प्रति ॥ पापे पळति प्राण्याचे ॥ ६० ॥
ते संत मुखी चि माही कथा ॥ जे आयादरे एके श्रोता ॥ ते त्याचे निज भाग्य तळता ॥ मज ही सर्व धान वर्ण वे ॥ ६१ ॥ मासे कथे
चि अति आवडी ॥ नित्य नुतन नवि गोडी ॥ सादरे एकता पापकोडी ॥ जळोनि राखोडी उरविना ॥ ६२ ॥ मासी कथा का मासे नाम
सकळ पात का करि भस्म ॥ हे चि चित्त शुद्धिचे बर्म ॥ अति सुगम उद्धवा ॥ ६३ ॥ नाना योग याग वेदाध्ययन ॥ करिता पवित्र न के
मन ॥ ते करिता हरि कथा श्रवण ॥ होय अतः कर्ण पुनित ॥ ६४ ॥ अबद्ध पठता वेदा ॥ दोष वाधी जी सुबद्ध ॥ नाम पठता अबद्ध ॥
ते होति शुद्ध परमार्थी ॥ ६५ ॥ नाना योग याग वेदाध्ययन ॥ तेथ अगधिकारि दीजसं पूर्ण ॥ कथा श्रवणे चारिवर्णी ॥ होति पावन
उद्धवा ॥ ६६ ॥ ऐसात्मा भक्त्या श्रवणि ॥ तरिकानार किजे सकळ जनि ॥ ते भाग्य भगवत कुपे वाचुनि ॥ सर्वथा कोणी लागेणा ॥
६७ ॥ भगवत कृपा पावले सांग ॥ त्यासी कथा किर्तनि अनु राग ॥ तेचि निज भाग्ये मजा भाग ॥ स्वमुखे श्रीरंग बोलीला ॥ ६८ ॥ जे
गाते पवित्र करिति ॥ मासी जाण नाम किंति ॥ ऐसाकळ वळोनि श्रीपति ॥ उद्धवा प्रति बोलीला ॥ ६९ ॥ ऐसी भगवत कुपे चि प्राप्ती ॥ के
वि आनुडे आपुले हाति ॥ तेचि अनार्थी श्रीपति ॥ विषद श्लोकाथी सांगत ॥ ७० ॥ ॥ श्लोक ॥ तो ये शून्य वरति गायति
शुनु मोदति चादता ॥ मत्सरा श्रद्धा नाश्रु भक्ति विंदति ते मयि ॥ २९ ॥ ॥ टीका ॥ आपुली याग हकार्योर्था ॥ विषय्या
पारि जात जाता ॥ कानि पडली हरि कथा ॥ स्वभावता प्रसंगे ॥ ७१ ॥ कळा किर्त कथनाक्षरे ॥ रिघता चि कर्णदारे ॥ भीतरि लपा
प एकसरे ॥ निघे बाह्ये गजवजोनि ॥ ७२ ॥ जे विपचानना चि आरोळी ॥ करि मद्गजारांगोळी ॥ ते विहरिक ये चामेळी ॥
करि रवळी महापापा ॥ ७३ ॥ ऐसा निघात्मा पापाचो केरु ॥ कथे सीउ पजे अत्यादरु ॥ कथावधानि धरिता धीरु ॥ हर्षनिर्भरु

वरुण ॥ ७४ ॥ जवजव कथारहस्य जोडे ॥ तवतव अनु मोदनि प्रीति वाटे ॥ वाढेल प्रितिचे नि पाडे ॥ तेकथाके वाडे स्वयं गाथ ॥ ७५ ॥
 केडुनिलानेचे वीरेडे ॥ गाताहरि गुणपवाडे ॥ नपाहे ताकर्म केडे ॥ नसाकडे सहदासी ॥ ७६ ॥ निजभोवे भगवत्कथा गाता ॥ स्वयं भउ
 पजेसादरता ॥ तेणे अयादरे करिकथा जोयसांगता अतिश्रद्धा ॥ ७७ ॥ जवजव कथासंगे निवाडे ॥ तवतव श्रद्धा अधीकचढे ॥ या
 माजी बुडे निजश्रद्धा ॥ ७८ ॥ कथाकिर्तकौ अनुकीर्ति ॥ वाढत्या श्रद्धे चिये प्रीति ॥ वाधून राके विषयासकी ॥ तिणे ममूरस्थी ति साध
 का ॥ ७९ ॥ नकरिता भगवद्भजन ॥ वेदाध्ययन यज्ञदान ॥ येणे चिआप्ती जाउतरुण ॥ श्रुणति ते जाण महामूढ ॥ ८० ॥ येथु मुख
 त्वे भर्गे इकी ॥ हावि ववास धरिता चिनि ॥ भगसुर साळावृत्ति ॥ सर्व भूति मद्भाव ॥ ८१ ॥ ऐसाभाव धरुनि हर्दई ॥ मासेभकी वेगळे काही
 सर्वथा स्वयंकरणे नाही ॥ ममुरा पाहे यारि ति ॥ ८२ ॥ ऐशिया ममूरवृत्ति ॥ सावधान निजस्थी ति ॥ भक्ताउपजेचौ धीभक्ती ॥ तिचि श्रीपति
 स्वयंसांग ॥ ८३ ॥ तेथन करिता आटवण ॥ अखंड होय हरिचे स्मरण ॥ श्रीयामात्र भगवद्भजन ॥ सहजे जाण सर्वदा ॥ ८४ ॥ जेजे दृष्टीदे
 से आपण ॥ थोर अर्थ वा सुदुर्मसान ॥ तेते हरिरूप संपूर्ण ॥ सहजे भजन अहेतुक ॥ ८५ ॥ जेजे वाचो वदे वचना ॥ तेते होय हरिचे स्मरण ॥
 स्तव्य स्तविता उणखुण ॥ हे हि अटवण विसरोनि ॥ ८६ ॥ शब्दी शब्दाते द्दविता ॥ ते शब्दरूपे हरिचिकथा ॥ शब्दबोतक ज्या शब्दाधी ते अर्थ
 ग्राहकता हरिचि ८७ ॥ यांपरि शब्दश्रवण श्रवणी श्रवण होता जाण तो शब्दार्थ संपूर्ण ॥ हायक श्रावण श्रवणेसी ॥ ८८ ॥ गंधघ्रा
 णाहाता भेती ॥ भोक्ते पणे हरिचि उदि ॥ तो घ्रेय प्राता प्राण विपुदि ॥ स्वये घोरी चिरवे ॥ ८९ ॥ रसस्नानारसतु बोधा ॥ तेथनि जभोक्ता भो
 गवैतें गोविदा ॥ तो भोग्यभोक्ता भोजन संबध ॥ करि परमानंद निजबोधे ॥ ९० ॥ धीत उळा मृदु कटिण ॥ निजागी लागता जाण ति अ
 गेचि होय आपण ॥ मृदु कटिण मिथ्यत्वे ॥ ९१ ॥ कराचि जे कर्तव्यता ॥ ती ते चालकी अकर्ता ॥ याखागीदिता घेता ॥ अकर्ता सक हरिभज
 ना ॥ ९२ ॥ निश्चळ निजरूपा वरि ॥ चपळ पातुलाच्या हरि ॥ चालवि जे शात हरि ॥ सूर्यकरि मृगजळाच्या ॥ ९३ ॥ आगृति स्वयं सखु सी ॥
 चिन्मात्री जडती वृत्ति ॥ चित्त चिन्ता चिस्फु विसेरुस्फु ती ॥ याना वम झकि उद्धवा ॥ ९४ ॥ हे मासी आवडति भक्ती ॥ हिचे नाव स्रणी जेची थी ॥
 देभाग्य आतुडे ज्याचे हाति ॥ ती च्यारि सुक्ति निजदासी ॥ ९५ ॥ श्लोक ॥ भक्तिं लब्धवतः साधो किमन्यददृशियते ॥ मय्यतै न त
 र्त्रं सुण्या नं दानु भवासनि ॥ ३० ॥ टीका ॥ अत्यंत मासी पठीयेति ॥ तेहे जाण चौधी भक्ति ॥ निजभाग्य लाधला हाति ॥ च्यारि सु

न
व

किं तृणप्राय ॥१६॥ निरपेक्ष जे थ मासी भक्ती ॥ ते थ पायाला गति च्यारि मुक्ति ॥ त्या ते भक्त न धरिति हाति ॥ यथवरि प्रीति म
 द्भजति ॥१७॥ मासी या निजन प्रीति ॥ स्व न्यी ही बधताने णि जे भक्ती ॥ बधते विण मुथ्या मुक्ति ॥ जाणोनि न घेति निज भक्ता ॥१८॥
 जे थ बद्धता स मूळ कुडी ॥ ते थ मुक्ति काय सी बापुडी ॥ मासी या निज भजन आवडी ॥ स्वानंद कोडी मद्भुक्ता ॥१९॥ निरपेक्ष निज
 प्रीति ॥ भावे करिता अनन्य भक्ती ॥ भक्ता सी स्वानंदा चि प्रीति ॥ भजन स्थाति मासारी ॥ ४० ॥ जे विगर्भे सी वर्तवि गुविणि ॥ कातरुण
 पणे सी तरुणी ॥ ते विस्वानंदा च्या पूर्ण पणी ॥ मासे निज भजनि मद्भुक्त ॥ १ ॥ ते थ सगुण अर्था वा मिर्गुण ॥ उभय रूपे मी ब्रह्म पूर्ण ते
 थ भावे करिता भजन ॥ ब्रह्म सपन्न मद्भुक्त ॥ २ ॥ भावे करिता मासी भक्ती ॥ भाविका कोण पा उगा प्राप्ती ॥ विवेक वे राग्य हो न संपति
 पायाला गति मद्भुक्त ॥ ३ ॥ मासे निज भजने तुठे भेद ॥ स्वये चिते थे प्रगठे भेद ॥ तेणे वोंसे ड परमानंद ॥ स्वानंद कद स्वयं भा ॥ ४ ॥ मा
 से स्वस्वरूपि नाही उगत ॥ यालागी मि नाये अनंत ॥ बाप भक्त भाव समर्थ ॥ तेणे मि अनंत अकळती ॥ ५ ॥ ऐसे ज्याचे प्रेम गोड ॥
 त्याचे रोवेचे मज कोड ॥ त्याचे सो गीमि साकरड ॥ निचाडा चाड मज याचि ॥ ६ ॥ देव प्रेम भूळला ॥ त्रुणे मि याचा उची अंकी ला ॥ जीव भा
 वे ति तिया विकीला ॥ मी याचा चि जीयाला ति ही लोकी ॥ ७ ॥ यथवरि भक्ता मासी प्राप्ती ॥ उगावचे र सात्त्वा स संगति ॥ सद्भाव जे साधू से
 विति ॥ या चि निज गति न वी लवे ॥ ८ ॥ ऐसा संत मही मा वाणिता ॥ धनी न पुरे श्री कृष्ण नाथा ॥ तोचि संत म ही मा मागुता ॥ होय वा
 निताची श्लोकि ॥ ९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ यथोपश्रयमायस्य भगवंतं विभाव सं ॥ शीतं भयं तमोऽप्येति साधून् ससेव तस्तथा ३०
 ॥ ॥ टीका ॥ जे विवेकवानर ते जो मूर्ति ॥ याचि रोवा जे करुजाणति ॥ याचे शीत त म भयनि धति ॥ तौ करि निश्चीति उद्धवा ॥ १० ॥ शीत नि
 वारि सन्नीधी ॥ तम निवारिते जो वृद्धी ॥ भयनि वारि भगवुधी ॥ जे वित्री शुद्धी विभाव सं ॥ ११ ॥ तैसी च जाणस संगति ॥ संगे श्री वि
 धतापनिवारि ति तेचि अर्थी चि निज युकी ॥ एक उतपति उद्धवा ॥ १२ ॥ शीत त्राणि जे दृढ बाधू ॥ तो समूळ निवारित साधू ॥ तत्र णी जे
 अज्ञान अंधु ॥ या करिति प्रबोधु नि ज्ञाने ॥ १३ ॥ भयमा जी श्रेष्ठ मरण ॥ ते निवारि ति साधू चि चक्षण ॥ दुर करिति जन्म मरण
 कृपा कु पूर्ण दिनाचे ॥ १४ ॥ अग्नी समान त्रुणणे साधू ॥ हा ही बोल अति अवडु ॥ अग्नी हुनि अधिक साधु ॥ तोचि जबाधु हरि सांजे
 १५ ॥ अग्नी पासी प्रबळ धूम ॥ सां दुनि क्रोधनि धुम ॥ अग्नी पोळी अधमो तम ॥ साधू सर्वे समकरवदाते ॥ १६ ॥ साधू चि धन्य धन्य सं

संगति संगे जइ ज्यतोडिति ॥ कर्मचिकर्मटल्व मोडीति ॥ बुडल्यातारिति निजसंगे ॥ १७ ॥ ॥ श्लोक ॥ निमज्जोन्मज्जती
 धारभावाधो परमावणे ॥ संतो ब्रह्मविदसंतानोरे उवाच मज्जती ॥ १८ ॥ ॥ श्लोक ॥ प्रतिक्षणिअधिकट्टी ॥ अम
 र्यदावाठविभवाधी ॥ तेथउकल्माचुकल्मा श्रीशुद्धी ॥ अधर्मबुद्धीजनासी ॥ १९ ॥ अधर्मेनिमज्जननरकांत ॥ स्वधर्मेउन्मज्जन
 स्वर्गांत ॥ एसेमोगीतिअवर्त ॥ स्वर्गनरकांत संसारि ॥ १९ ॥ पडल्याजळार्णवा मासोति ॥ जेविअळीद्रनावलाशि ॥
 तेविबुडताभवसागुरि ॥ सुखरूपतारिमज्जनावे ॥ २० ॥ यापरिसंसारिजन ॥ पावतिउन्मज्जनिमज्जन ॥ यासीत
 रावयाभवाधी जाण ॥ साधूसज्जनदृढनावे ॥ २० ॥ कामक्रोधरहीतशांति ॥ हेचिनावेचिअच्छिद्रस्थीति ॥ ब्रह्मज्ञाने
 सपुरति ॥ सुखरूपहेतुयानिश्चीतियोहेतु ॥ २२ ॥ कामक्रोधादि सावज्यासी ॥ बळेध्यावयाअवि सासी ॥ कुदानपावे
 नावेपासी ॥ संगेसकळासीतारक ॥ २३ ॥ नवतयानवेचिस्थीति ॥ जुनिनकेकल्मांति ॥ बुडउनणेधारावति ॥ तारकनि
 श्चीतिनिजसंगे ॥ २४ ॥ परियानावेचिनवतगति ॥ वरिचढलेतेकुडति ॥ तकीराहीलेतेतरति ॥ जाणनिश्चीतिउडुवा ॥ २५ ॥
 दिनाचाकळवळापाहाहो ॥ हामुख्यहेतरुणोपावो ॥ याकळवळ्याचाअभीप्रावो ॥ स्वयदेकोसंगत ॥ २६ ॥ ॥ श्लोक ॥
 अचंदिप्राणिनांप्राणअर्त्तानां शरैर्वहं ॥ धर्मावित्तमनृणां प्रैत्यसंतोऽवीश्विभ्यतोरणं ॥ २७ ॥ ॥ श्लोक ॥ जेविअ
 नेविणप्राण ॥ सर्वथानवाचतिजाण ॥ प्राण्येचेप्राणपोषण ॥ करावयासमर्थपूर्णअन्नदामे ॥ २७ ॥ जोडतीधर्माचीसप
 ति ॥ तेहीजेकिहोयुरक्षीति ॥ तेचिधर्मधनदेहाति ॥ उत्तमगतिदायक ॥ २८ ॥ संसारिपिडीलेदारुण ॥ त्रिचिधतापेता
 पलेपूर्ण ॥ ऐशियाशरणगताशरण्य ॥ मीनारायणरक्षीता ॥ २९ ॥ मासेकरितानामस्मरण ॥ सहजेनिवारेजन्ममरण ॥
 यामार्जीरिघालीयाशरण ॥ बाधीदुःखकोणवापुडे ॥ ३० ॥ दुःखभयनपावताआधी ॥ जिहीसाधूसविलेसबुद्धी ॥ या
 सीभवभयाचिअधिब्याधी ॥ जाणश्रीशुद्धीबाधीना ॥ ३१ ॥ प्राणियासीहोतापतन ॥ भाग्येभेटल्याजनादन ॥ निजकूपेने
 अधोगमन ॥ जन्ममरणछेदिनु ॥ ३३ ॥ संसारतरावयाजाण ॥ सत्सगतिचिप्रमाण ॥ त्याचेभावधरिताचरण ॥ दिनोदर
 याचेनि ॥ ३३ ॥ ॥ श्लोक ॥ संतोदिवातिवक्ष्णिवहिरकःसमुत्थितः ॥ देवतावीधवाःसंतःसतआत्माऽहमेवच ॥ ३४ ॥

प

॥१॥ ते विअधारे स्त्री स ग जी सति ॥ नीज ते जे निर स्त्री गभ स्त्री ॥ ससंग सूर्य प्राप्ती ॥ अवियेचि निश्च्येति नि
 र्शनीनि र्ग ॥ ३४ ॥ वास्य उगवल्का गभस्त्री ॥ चोराभयाचिनिष्ठनि ॥ ते विजोडल्याससंगति ॥ भवभयकत्नांति असेना ॥
॥३५॥ वास्यसूर्यादयाकोळी ॥ पक्षीसांडीतिअविसाळी ॥ ससंगसूर्याचेमेळी ॥ देहाचिअविसाळीसांडीतिजीव
॥३६॥ वास्यसूर्याचाकीरणी ॥ दुर्धविकाश्रीकमळणि ॥ ससंगसूर्याचेमिळणि ॥ निर्विकलकमळणिविकाश्री ॥ ३७ ॥
 सूर्य उगवलीयागगणि ॥ चक्रवोकेमिळतिमिळणि ॥ तेविससंगतापावोनि ॥ जीवशीवदोनि एकवटति ॥ ३८ ॥ वास्यसू
 र्याचेपाहाटेसी ॥ पांथीकचालतिग्रामासी ॥ ससंगसूर्याचेप्रकाश्री ॥ मुमुक्षुनिजधामासीपावति ॥ ३९ ॥ वास्यसूर्याचेउद
 यरथीति ॥ कर्माचिचालेकर्मगति ॥ ससंगसूर्याचेसंगति ॥ निष्कर्मप्रवृत्तिप्रवर्त ॥ ४० ॥ सूर्यविवाचेउदयसंधो ॥ अर्धदा
 नादिजेवेदविधी ॥ ससंगसूर्याचेसमधी ॥ दिजेदेहबुध्धीतिलांजुली ॥ ४१ ॥ सूर्य उदयाचियाप्राप्ती ॥ याहीकहोमातेहावि
 ति ॥ तेवसेसंगसूर्यस्थीति ॥ अहंताहवितिज्ञानाग्नी ॥ ४२ ॥ सूर्य उगउनिअकाश्री ॥ उगचीजडतानिरासी ॥ सेतउगउनि
 चिदकाश्री ॥ जीवाप्रकाशप्रबोधी ॥ ४३ ॥ होकासाधूसूर्यासमान ॥ हेबालणेनिलगहीण ॥ सूर्यपावेअस्मान ॥ साधूप्रका
 शमानसर्वदा ॥ ४४ ॥ सूर्यासीआउदिअभाळ ॥ साधूसदाजनिनिर्मळ ॥ सूर्यासीसदाश्रमणकाळ ॥ साधुअचळभ्रमरही
 तु ॥ ४५ ॥ ग्रहणकाळाचात्वल्काहे ॥ पाहातासूर्यासीग्रासीराहो ॥ साधुगहाचापुसोनिगवो ॥ स्थानेपाहायेनादति ॥ ४६ ॥
 धूरदारताप्रवळ ॥ तेणअछोदरविमंडळ ॥ तमधूममोहपडळ ॥ साधुसीषकुमाळबाधीना ॥ ४७ ॥ सूर्यनिजकिरणेस
 सर्वातेतावि ॥ साधुनिजागेजागानिववि ॥ सूर्यसर्वातेक्षयोरावि ॥ साधुअक्षयोकरिवोघे ॥ ४८ ॥ सूर्यासारहातीयावळी
 देशाकारेउधेडसृष्टी ॥ ससंगसाह्यहातीयापृष्टी ॥ चिन्मात्रसृष्टीरसावे ॥ ४९ ॥ विवेकविचारितारेख ॥ सूर्याहनिसाधुआ
 धीक ॥ साधुधरातकीज्ञानोर्क ॥ भवोथितारकनिजसंगिया ॥ ५० ॥ पृथ्वीतळीदेवतासाधु ॥ साधुदिनाचसखेबंध ॥ सा
 धुरूपेमिपरमानंद ॥ ५१ ॥ आणप्रसीदपरमात्मा ॥ ५२ ॥ देवादिजेवळीआवदान ॥ तेकोदेवहोतिप्रसेन्न ॥ कृपातारकेमिज

सज्जन। दयालु पुणदिनाये ॥ ५२ ॥ रुद्रसखे स्वगोत्र बंधू ॥ द्रव्यलोभे भजनं सवधू ॥ निजलोभे कृपाळु साधू ॥
 सखे बंधू दिनचि ॥ ५३ ॥ संतके वळ कृपे च रिप ॥ संतते मोसे निज स्वरूप ॥ याळांगी ससंगे फिरे पाप ॥ हो ति निव्याप सा
 धक ॥ ५४ ॥ नीः पाप कर नि साध कासी ॥ ब्रह्म स्वरूप तो देति त्यासी ॥ ऐसे कृपाळु त्व साधू पासी ॥ जाण नि श्वय सी उडवा ॥
 ॥ ५५ ॥ श्रीनिर्गुणवे ब्रह्म पूर्णा ॥ साधू चालते वोलते ब्रह्म जाण ॥ तथा सी रिघाली या शरणे ॥ जन्म मरण बाधेना ॥ ५६ ॥ साधू सी सा
 धू वारण ॥ रिघात्मना वा जन्म मरण ॥ साधू वारण गता शरण्य ॥ सत्य जाण उडवा ॥ ५७ ॥ भावे धरि लीया ससंगे ति ॥ संसारी या
 लोय मु कि ॥ हे प्रति सा पूर्व क श्रीपति ॥ उडवा प्रति बोलीला ॥ ५८ ॥ सद्भाव सी ससंगति ॥ धरिता घराये ब्रह्म स्थीति ॥ हे निज बर्म उडवा
 प्रति ॥ देवे अध्याया निरूपिले ॥ ५९ ॥ परम विरक्ति च कारण ॥ ते हे पुरु र वा प्रकण ॥ उपसंहारे श्री कृष्ण ॥ आध्याया ति जाण संप
 वि ॥ ६० ॥ ॥ श्लोक ॥ वैतसे नस्ततो ऽप्ये वसुर्वत्रया लोक नि स्पृहः ॥ मुक्तसंगो मही मेता माता रामश्च चारु ॥ ३५ ॥

॥ टीका ॥ ॥ इति श्रीमद्भागवते ॥ एकादशस्कंदे षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ पूर्विसूर्यविराप्रसीद्ध तेथ सोम
 वंशाचा समध ॥ वैतसे व श्लोकि च पदा ॥ लाउनि गे विद बोलीला ॥ ६१ ॥ उमावनि अति एकांत ॥ तेथ उमा आणि उमाकांत ॥ विगत वासे
 सी कीडत ॥ स्वानंद युक्त स्वलीला ॥ ६२ ॥ तेथे शीवाचे दर्शनासी ॥ अवचेर आले सप्त रूषी ॥ लज्या उपजे लपार्व ति सी ॥ तिने या वणा
 रापिले ॥ ६३ ॥ जो पुरुष यावना अत ॥ यरले तो होयी लस्त्री रूप यथ ॥ ऐसा म्नाप क्रोध युक्त ॥ बदली नि श्वी त जगदंबा ॥ ६४ ॥ तेथ रा
 जो सुद्युम्न सूर्यवंशी ॥ नेणो विया शाप प्रभावासी ॥ पारधी आला या वणा सी ॥ सकळ सेने सी स न्बडा ॥ ६५ ॥ रिघता चित्यावना अ
 त ॥ पुरुषत्व फाले ठले तेथ ॥ बापशापोचे सामर्थ्य ॥ शाले समस्त स्त्रीरूपे ॥ ६६ ॥ तेथ पुरुष हा चि आठवण ॥ नीः शोष विसरले मन ॥ आप
 ण पूर्विले तो कोण ॥ बही संपूर्ण पिसरले ॥ ६७ ॥ अश्व साले अत्रिदाणी ॥ हस्ती शाले हस्तीनि ॥ पुरुष शाले का मी नि ॥ तक्षाणि त्यावनात ॥
 ६८ ॥ तेथ पुरुष कामे कामासं कि ॥ अनेक अनेक पुरुषां प्रति ॥ स्त्री यागे लीया त्या समस्ती ॥ अतिका मरति संभोगा ॥ ६९ ॥ राजा सुद्यु
 म्न साळानारि ॥ अतिसकुमार रंजदरि ॥ तो सोमपुत्र बुधातकारि ॥ अति प्रीतिकरि भाळो नि ॥ ७० ॥ बुधे रुद्रु न्मदखो नि नारि ॥ तो भू ल

ल्हा स्त्री काम करि ॥ एवं अति प्रीति परस्परि ॥ यरयरावरि भाऊ ली ॥ ७१ ॥ बुध महाराज चुडा मनि ॥ तोरु युग्मा स्त्रीचे प्रणी ॥ किली पय
 चिनित्र राणि ॥ वाप कणिके मचि ॥ ७२ ॥ रुद्रु म्बुध विर्य करि ॥ पुरुरवा जमे ल्याचे उदरि ॥ एवं सूर्य वंशामा शारि ॥ सोम वंशाय पदिसं चर
 ल्हा ॥ ७३ ॥ रु सोम वंश गि विअय कया ॥ यथु नि सोम वंश वाठ ता ॥ श्री कृष्ण बोली लाधु नि तार्थी ॥ तेचि म्या कथा उपल विली ॥ ७४ ॥ रुद्रु
 म्बुधाला बुधाचि नरि ॥ मागे सूर्य वंशामा शारि ॥ नाही राज्या सी अधिकारि ॥ संकट भारि खोरु बले ॥ ७५ ॥ ते सूर्य वंशी चा कळ
 गुरु ॥ बरी कळ म हा योगे स्वसु ॥ तेणे करु नि अत्यादर ॥ गौरि हर प्रार्थी ल्हा ॥ ७६ ॥ असु न्नु करु नि पाव ति सी ॥ मागे रुद्रु म्बु
 धा पाया पा सी ॥ येरी संगे म हा दे वा सी ॥ तु श्री व सी ल्हा सी बुध वावे ॥ ७७ ॥ जे भवाणि चें शग पव चन ॥ कदा उअन्य थान के
 जाण ॥ धरा वया व सी ल्हाचे मन ॥ न व ल वि दान श्री वे कळे ॥ ७८ ॥ सुद्रु पक्षी रुद्रु म्बु धा सी ॥ पुरुष तव श्रास होई त त्या सी ॥ कृष्ण
 पक्षी बुधा पा सी ॥ स्त्री भावे सी वर्त ल्हा ॥ ७९ ॥ पक्ष पुरुष पक्ष नरि ॥ ऐ शी या उप श्रा पा चि परि ॥ श्री वे करु नि रुपा करी ॥ के ल्हा
 अधिका रि निज राज्या ॥ ८० ॥ पुरुष तव पाव त्या रुद्रु म्बु धा सी ॥ ते पुरुष तव ना वडे या सी ॥ स्त्री संभोगे बुधा पा सी ॥ अति प्रीति सी लो
 ध ल्हा ८१ ॥ स्वर्ग उप श्रा रा अती या पा सी ॥ स्त्री ना व डे ति रुद्रु म्बु धा सी ॥ सा रु नि प्रीति बुधा पा सी ॥ स्त्री भावे सी अनि वा
 र ॥ ८२ ॥ बुधा सी स्वर्ग गना ॥ संभोगी न यति म ना ॥ ऐ शी उअ ति प्रीति रुद्रु म्बु धा ॥ स्त्री भोगे जाणा विरु त ली ॥ ८३ ॥ स्त्री दे
 ही जो आत्मा असे ॥ तो भोगी जे म्या हू षी के रो ॥ इतरा मी स्त्री दे ही चे पि से ॥ विषय वे त्रो भुल वा नि ॥ ८४ ॥ पुरुषी पुरुष त्वा चि रि ति
 भोगे जाणे मी श्री पति ॥ इतर वा पुडे ते कि ति ॥ स्त्री दे हा सति भुल ली ॥ ८५ ॥ असो रु सा गा वे कि ति ॥ कामी निष्काम ते चि रि ति ॥ ते
 मी जाणे रमा पति ॥ का जाण ति नि जानु भवी ॥ ८६ ॥ स्त्री दे ही अति अस ती ॥ सा चि ना वे कामा सति ॥ सा स्त्री कामा चि निज नि
 र ति ॥ जाण निश्ची ति ससंगे ॥ ८७ ॥ व सी ल्हा चि ये सस गति ॥ स्त्री स्त्री भावा चि नि र ति ॥ रुद्रु म्बु धा पा व त्या पुरुष प्राप्ती ॥ ध
 न्य श्री जग ति सस ग ॥ ८८ ॥ पुरुष तव पावो नि रुद्रु म्बु धा ॥ निज नगरा ये तो जाण ॥ स्त्री भावे न छले से न्य ॥ एक ल्हा आप ल्या स्व य
 आत्मा ॥ ८९ ॥ एवं नी शेष गत से न्य ॥ या ल्हा गी ना वे वी त्त से न्य ॥ सा वित से ना चा पुत्र जाण ॥ वे तसे न पुरु र वा ॥ ९० ॥ ब्रह्म वि चें
 तों ब्रह्म पणे ॥ तेणे निजाम ता अति वी कि ॥ सांडू नि स्वर्ग भोग स पति ॥ सजू नि उर्व री कामा स ती ॥ आत्मा राम रथी ति पाव त्या

२

